अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुरव-पत्र

सर्वोदय जगत

वर्ष- 43, अंक- 05, 16-31 अक्टूबर 2019

दृढ़ चरण, सुदृढ़ कर संपुट-से तुम कालचक्र की चाल रोक,
नित महाकाल की छाती पर लिखते करुणा के पुण्य श्लोक!
कंपता असत्य, कंपती मिथ्या, बर्बरता कंपती है थरथर!
कंपते सिंहासन, राजमुकुट कंपते, खिसके आते भू पर,
हैं अस्त्र-शस्त्र कुंठित लुंठित, सेनाएं करतीं गृह-प्रयाण!
रणभेरी तेरी बजती है, उड़ता है तेरा ध्वज निशान!
हे युग-द्रष्टा! हे युग-स्रष्टा! पढ़ते कैसा यह मोक्ष-मंत्र?
इस राजतंत्र के खंडहर में उगता अभिनव भारत स्वतंत्र!

-सोहनलाल द्विवेदी

सर्व सेवा संघ
(अखिल भारत सर्वोदय मंडल)
द्वारा प्रकाशित

अहिंसक क्रान्ति का पाक्षिक मुख-पत्र
सर्वोदय जगत
सत्य, अहिंसा एवं सर्वोदय-सम्पूर्ण क्रांति का संदेश वाहक

वर्ष : 43, अंक : 05, 16-31 अक्टूबर 2019

अध्यक्ष
महादेव विद्रोही

संपादक
बिमल कुमार
सहसंपादक
प्रेम प्रकाश
09453219994
संपादक मंडल
डॉ. रामजी सिंह भवानी शंकर 'कुसुम'
प्रो. सोमनाथ रोडे अरविन्द अंजुम,
रमेश ओझा अशोक मोती

संपादकीय कार्यालय
सर्व सेवा संघ
राजघाट, वाराणसी-221001 (उ.प्र.)
फोन : 0542-2440-385/223
ईमेल : sarvodayajagat@gmail.com
Website : sssprakashan.com

शुल्क

एक प्रति	:	05 रुपये
वार्षिक	:	100 रुपये
आजीवन	:	1000 रुपये

खाता संख्या : 383502010004310
IFSC Code : UBIN0538353
Union Bank of India
Rajghat, Varanasi

इस अंक में...

1. संपादकीय... 2
2. लगते तो थे दुबले बापू, थे ताकत के... 3
3. मानवता की जो कब्र, वही गांधी की भी... 5
4. कश्मीर, दलित, आदिवासी, देश की... 7
5. आचरण की शुद्धता स्वराज की पहली... 10
6. जलवायु परिवर्तन के खतरों पर विश्व... 11
7. अफवाहों का बाजार और इतिहास... 13
8. जीवन-आरोहण का गांधी-दर्शन... 16
9. गतिविधियां एवं समाचार... 18
10. कविताएं... 20

संपादकीय

गांधी-150 और आगे

गांधी-150 मनाने की रस्म पूरी हो चुकी है। अब राजनीति और अर्थनीति अपने एजेंडे पर पुनः आगे बढ़ने लगेगी। और ये एजेंडा पूरी तरह गांधी-विचार के विरोध में खड़ा है। सबसे ज्यादा और जोर-शोर से गांधी-150 उत्सव उन्होंने मनाया जो गांधी-विचार के पूर्ण विरोधी हैं और मीडिया ने भी उन्हें ही प्रचारित किया।

इस स्वांग को मनाने का पाखंड क्यों किया गया, इसका एक स्पष्ट जवाब है। विश्व की नैतिक चेतना को या यूं कहें कि मानवता की नैतिक चेतना को आज गांधी स्वीकार्य हैं, गांधी की जरूरत है। किन्तु राजसत्ताओं और अर्थसत्ताओं को गांधी खटकते हैं। इसलिए उनकी कोशिश होती है कि गांधी का महिमा-मंडन तो करो, किन्तु गांधी के क्या विचार थे, उनका संघर्ष किन मूल्यों के लिए था, ये बातें लोगों तक न जाने दो। जो गांधी को मानते हैं, उनको भी चाहिए कि वे भी रस्म अदायगी से ऊपर उठें और अगले एक वर्ष के लिए अपना एजेंडा तय करें।

सत्य और अहिंसा गांधीजी की निष्ठा थी और सार्वजनिक जीवन में इन्हें व्यवहार रूप देने का प्रयोग वे जीवनपर्यंत करते रहे। राजसत्ताएं और अर्थसत्ताएं सार्वजनिक जीवन से सत्य और अहिंसा को निरंतर बहिष्कृत करने का कार्य कर रही हैं। उन प्रवृत्तियों का निषेध तथा सत्य व अहिंसा के आधार पर नयी समाज रचना के काम को खड़ा करना एक बड़ी चुनौती है। इस काम को वही कर सकते हैं, जो स्वयं भी सत्य एवं अहिंसा को अपने जीवन में उतार रहे हों। गांधी विमर्श में इस बात को आगे बढ़ाना होगा।

सर्वधर्म समभाव विचार पर निरंतर प्रहार हो रहा है। एक तरफ गांधी-150 को मनाना और दूसरी तरफ सर्वधर्म समभाव की निष्ठा के विरुद्ध काम करना, क्या गांधी विचार की हत्या के समान नहीं है। इस विचार के इर्द-गिर्द एक व्यापक जन-आंदोलन खड़ा करना, गांधी-150 मनाने का सबसे सार्थक कदम होगा।

ग्राम स्वराज एवं शरीर श्रम केन्द्रित आर्थिक व राजनीतिक व्यवस्था के निर्माण को हमने अपने विमर्श और संघर्ष की रणनीति में किस सीमा तक समाहित किया है? नये समाज के निर्माण के लिए, इनकी आवश्यकता व अपरिहार्यता को स्थापित करने की दिशा में हम कितना आगे बढ़े हैं? और इनके बिना नये समाज के निर्माण की बुनियाद कहां और क्या होगी? इसे हम विमर्श के केन्द्र में क्यों नहीं ला पाये, इस पर भी मंथन करना होगा।

एक और पक्ष है। जो जानते हैं कि गांधी की स्वीकार्यता से उनकी संकीर्ण और पूंजीवाद परस्त नीति सफल नहीं होगी, उन्होंने गांधी के खिलाफ कुप्रचार एवं झूठे सवाल खड़े किये हैं। उनकी आई. टी. सेल, व्हाट्सएप व फेसबुक के माध्यम से निरंतर जहर भरने का काम कर रही हैं। भारत-विभाजन में गांधीजी की भूमिका, क्या वे मुस्लिम परस्त थे, क्या वे पूंजीवादियों के समर्थक थे, क्या उन्होंने भगत सिंह को फांसी न हो, इसका प्रयास नहीं किया था, क्या सुभाषचन्द्र बोस के साथ उनके मतभेद स्वतंत्रता आंदोलन को कमजोर करने वाले थे, क्या वे जाति-प्रथा के समर्थक थे आदि। गांधीजी के बारे में भ्रम फैलाने वाले इन झूठे सवालों का समुचित उत्तर देना भी आवश्यक है। अतः अगले एक वर्षों में इन प्रश्नों के बारे में स्पष्ट समझ बनाने का भी अभियान चलाना होगा।

एक तीसरा पक्ष यह है कि परिवर्तनकारी शक्तियों के बीच गांधी विचार के आलोक में कई विमर्शों को बढ़ाना होगा। जैसे गांधी बनाम हिंसा, गांधी बनाम मार्क्स, गांधी बनाम अम्बेडकर, गांधी बनाम समाजवाद, चुनावी रणनीति बनाम लोकशक्ति निर्माण की राणनीति, स्त्री-विमर्श, युवा शक्ति, किसान व आदिवासी आंदोलन आदि।

आज चुनौतियां इतनी गंभीर हैं कि परिवर्तनकारी शक्तियों को आपस में इन विमर्शों को जारी रखते हुए भी एक व्यापक मंच पर आना होगा। जनमानस में स्वीकार्य नैतिक चेतना का जो व्यापक आधार है, उसे आलम्ब बना कर जन-आंदोलनों व जन-अभियानों को खड़ा करना होगा। इसकी पहल करना गांधीनिष्ठ परिवर्तनकारियों की जिम्मेदारी है। गांधी-150 को सार्थक बनाने का यही सार्थक तरीका होगा। **–बिमल कुमार**

लगते तो थे दुबले बापू, थे ताकत के पुतले बापू

❑ मनोहर नोटानी

'गांधीजी' शब्द मैंने पहली बार कब सुना, यह बता पाना नामुमकिन है. जैसे कि और भी बहुत सी संज्ञाओं के बारे में मैं ठीक-ठीक नहीं बता सकता कि वे पहली बार कब मेरे स्मृति पटल पर अंकित हुईं. यानी मेरे लिए वे स्मृति के एक अभिन्न हिस्से के जैसी हैं. मुझे यह भी याद नहीं है कि उनकी कहानियां किसी ने विशेष तौर पर बचपन में मुझे सुनाईं या किसी ने उनको लेकर खास प्रवचन दिए. बचपन की सबसे पुरानी स्मृतियों में जाता हूं तो याद आता है कि एक बार मेरे नानाजी किसी से संवाद कर रहे थे और गांधीजी का एक किस्सा सुना रहे थे, जिसमें गांधी के ऊपर कोई बुढ़िया रोज कूड़ा फेंक देती थी. और गांधी जी उससे कुछ नहीं कहते थे. एक दिन कूड़ा नहीं फेंका गया तो गांधी जी ने वजह पता की. उन्हें पता चला कि बुढ़िया बीमार है. गांधी जी उसे देखने उसके घर गए और उसकी देखभाल की. बुढ़िया को अपने किये पर बहुत शर्मिंदगी हुई.

इस कहानी को सुने 30-32 साल हो गए, मुझे नहीं पता कि यह कहानी सच्ची है या झूठी. बल्कि अभी एक विद्वान मित्र ने इसी तरह की कहानी मोहम्मद साहब के बारे में जरूर सुनाई. पता नहीं कौन-सी कहानी सच्ची है. लेकिन जिसने भी यह कहानी रची होगी, उसने लोकमानस में अपने नायक को रचने का पक्का इंतजाम किया होगा. सुनने वाले को एक सबक देने की कोशिश की होगी.

गांधी जी की दूसरी कहानी बचपन में मैंने तब सुनी, जब हम बच्चे मैदान में खेला करते थे. अक्सर कोई बच्चा किसी बच्चे को मार देता था, दूसरा बच्चा भी पटलकर मार देता था. तब बच्चे अक्सर कहते थे कि मैं कोई गांधी जी हूं, कि कोई एक गाल पर थप्पड़ मारे तो अपना दूसरा गाल भी हाजिर कर दूं? यह कहानी अक्सर गांधीजी पर व्यंग्य के रूप में सामने आती थी. यही हाल गांधीजी के तीन बंदरों का था. मैं तब से लेकर आज तक समझ नहीं पाया कि इन कहानियों में मुझे अपने दोस्तों के साथ खड़ा होना चाहिए, या गांधी जी के साथ? और उससे भी आगे बढ़कर मैं यह नहीं समझ पाया कि गांधीजी क्या ठीक वैसा ही कहते थे, जैसा कि हम लड़के खेल-खेल में समझते थे.

जब मैं कॉलेज में गया और अपेक्षाकृत पढ़े-लिखों की सोहबत में आया तो मैंने पाया कि मेरी क्लास की एक टॉपर लड़की एक दिन इस बात पर नाराज थी कि महात्मा गांधी हड़ताल और बंद का 'अच्छा' तरीका सिखा गए, अब जिसको समझ में आता है, हड़ताल कर लोगों को परेशान करता है. यहां तक, गांधीजी के बारे में ज्यादा जानने-समझने में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं हुई. मेरे लिए इतनी जानकारी पर्याप्त थी कि वह हमारी आजादी के नायक हैं. उन्होंने अहिंसक तरीकों से लड़ाई लड़ी, जिसके सामने दुनिया ने सिर झुकाया. सत्य और अहिंसा उनके सबसे बड़े मूल्य थे. वे हमारे राष्ट्रपिता हैं. और उनसे बड़ा आदमी भारत में नहीं हुआ. इस अंतिम वाक्य को छोड़कर बाकी सारी जानकारी मुझे पाठ्य पुस्तकों से मिली थी. मेरे पास अपनी पाठ्य पुस्तकों पर शक करने की कोई वजह नहीं थी. इसके अलावा 'साबरमती के संत' जैसे फिल्मी गानों का भी मन पर असर था. हां, सातवी-आठवीं कक्षा में पढ़ता रहा होऊंगा, तब दूरदर्शन पर 'गांधी' फिल्म भी देख ली थी. उससे मूर्ति और कथाओं से जन्मे गांधी की छवि एक चलती-फिरती आग की तरह मेरे जेहन में बस गई. लेकिन कॉलेज में ही एक और पढ़े-लिखे लड़के ने जलियांवाला बाग कांड का जिक्र करते हुए कहा कि गांधी वहां जाने वाले थे, लेकिन जान बूझकर वहां नहीं गए. फिर एक अजीब सी कहावत सुनी—'मजबूरी का नाम महात्मा गांधी'. दसवीं कक्षा में इतिहास के बंधन से मुक्त हो चुके मेरे जैसे विज्ञान के छात्र के लिए यह जरा गहरी चोट थी. उसके बाद तो शहर के कई पढ़े-लिखे मध्यमवर्गीय लोगों ने ऐसे-ऐसे गलीच किस्से सुनाए, जिनकी कल्पना मेरे बचपन के छोटे कस्बों के मध्यमवर्ग ने कभी की ही नहीं थी. जैसे-जैसे जीवन बड़े शहरों, बड़े कॉलेजों और संस्थागत झूठ की तरफ बढ़ता गया, गांधीजी की आलोचना में सुनाए जाने वाले किस्सों की संख्या भी बढ़ती गई.

तुलसीदास जी के शब्द उधार लें तो – 'जस-जस सुरसा बदन बढ़ावा, तास दून कपि रूप दिखावा' की तर्ज पर गांधी की आलोचना के किस्से और उनको और ज्यादा जानने की मेरी तलब बढ़ती गई. जाहिर है, सिलसिला तो महात्मा गांधी की आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' से ही शुरू हुआ. लेकिन पहला बड़ा मुकाम बापू की पोती सुमित्रा कुलकर्णी द्वारा तीन खंड में लिखी महात्मा गांधी की जीवनी 'अनमोल विरासत' के रूप में सामने आया. उसके बाद से आज तक लगातार जहां, जो मिला, बापू के बारे में पढ़ता रहा हूं. लेकिन पढ़ने से क्या होता है. कबीर कह ही गए हैं—'पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ, भया न पंडित कोय'. इसीलिए लगता है कि गांधी जी को शायद थोड़ा बहुत समझ पाया. और समझने का मजा यह कि जिन सवालों और झूठ के जवाब की तलाश में गांधी को पढ़ना शुरू किया था, गांधी को पढ़ने के बाद उन सवालों का जवाब देने का मन ही नहीं रह गया. इसकी वजह यह कि वे सवाल असल में इतने ओछे हैं कि उनका जवाब देना उस महात्मा की तौहीन ही होगी. जब कोई गांधी जी के जीवन के अंतिम वर्षों को देखगा तो पाएगा कि उनके जीवन का सबसे कठिन वक्त तब आया, जब उन्हें सबसे सुखी होना चाहिए था. गांधी जी के लिए वह वक्त उतना कठिन नहीं था, जब उन्हें ट्रेन से उठाकर फेंक दिया गया

था. उनके लिए वह वक्त भी कठिन नहीं था, जब वह गिरमिटिया लोगों को एकजुट कर दक्षिण अफ्रीका में संघर्ष कर रहे थे. उनके लिए वह वक्त भी बहुत कठिन नहीं था, जब करीब 30 साल तक वह अंग्रेजों के खिलाफ इस देश को एकजुट कर रहे थे और दुनिया के सबसे बड़े साम्राज्य के पांव उखाड़ रहे थे.

उनके लिए सबसे कठिन वक्त तब आया, जब आजादी का सूरज उगने से ठीक पहले हिंदुस्तान के लोग एक-दूसरे को कत्ल करने लगे. 15 अगस्त 1946 से मुस्लिम लीग की अगुवाई में शुरू हुआ डायरेक्ट एक्शन का फैसला बापू की सबसे बड़ी परीक्षा लेकर आया. बड़े पैमाने पर हिंदू-मुसलमान एक दूसरे का कत्ल करने लगे और मुल्क में हद दर्जे की लूटपाट होने लगी. भारतीय जनमानस में छिपी बर्बरता अपने सबसे वीभत्स रूप में सामने आने लगी. ऐसे में गांधी नोआखाली की तरफ अकेले ही निकल गये. सुरक्षा तक लेने से मना कर दिया. हिंदू-मुस्लिम नफरत की तेज आंधी में वहां की अल्पसंख्यक हिंदू आबादी की रक्षा करने लगे.

मुसलमानों के हाथों से टूटे हुए मंदिरों में मूर्तियां स्थापित कराने लगे. और फिर एक दिन चप्पल उतारकर नंगे पांव चलने लगे, क्योंकि उन्हें लगा कि वह जमीन पर नहीं, श्मशान भूमि पर चल रहे हैं, जहां डग-डग पर लोगों की समाधियां हैं.

नोआखाली में निहत्था, अकेला, बूढ़ा मोहनदास सिर्फ और सिर्फ उस ईश्वर की पनाह में था, उस आस्था की गोद में था और उस मानवता के भरोसे पर था, जिसे कोई भी छोटे मन का आदमी समझ ही नहीं सकता. उसी नोआखाली में जब गांधी को पता चलता है कि बिहार के हिंदू मुसलमानों को मार रहे हैं, तो गांधी नोआखाली में ही आधे दिन का उपवास शुरू करता है. यह कहते हुए कि बिहार के हिंदू अगर सही रास्ते पर नहीं आए, तो वह पूरे दिन का उपवास शुरू करेगा. उसके बाद से 30 जनवरी 1948 तक गांधी की हर सांस में महात्मा के दर्शन होते हैं. जब 15 अगस्त 1947 को कलकत्ता में बैठा गांधी, उस आजादी का जश्न नहीं मनाता, जिसके लिए वह ताजिंदगी लड़ता रहा, तो वहां पता चलता है कि वीतराग होना क्या होता है. और अपने बच्चों की सरकार में जब वह कलकत्ते में आजाद भारत में पहला अनशन करता है, तो लगता है कि मोहनदास की आजादी की कल्पना उस कल्पना से कितनी बड़ी है, जो आजकल हम भारत माता की जय या जय हिंद या खुद को राष्ट्रवादी कहकर साबित करते हैं.

यही वह मुकाम था, जब गांधी के अपने लोग मुखर होकर गांधी का विरोध करने लगे. कलकत्ते के उपवास में राजाजी ने गांधी जी से कहा कि अगर जीवन का मोह नहीं है, तो क्यों पानी में नींबू डालकर पीते हो. और गांधी ने अपने पुराने दोस्त से कहा कि तुम सच कहते हो, जीवन का कैसा मोह. और नीबू भी छोड़ दिया. जब गांधी दिल्ली में अंतिम उपवास करते हैं, तो देखते हैं कि अपने हाथ से गढ़े गए, पटेल उनसे दूर हो रहे हैं. मौलाना आजाद ने गांधी के अंतिम दिनों में सरदार पटेल और गांधी की मुलाकात के बारे में लिखा कि पटेल ने जिस लहजे में गांधी से बात की वह समझ से परे था.

उनके अपने लोग अगर विचार और जुबान से जुदा हो रहे थे, तो विचार में हमेशा से उनसे दूर रहे कुछ हिंदुस्तानी उनके कत्ल की तैयारी कर रहे थे. बिड़ला भवन में उन पर बम फेंका गया. लेकिन स्थितिप्रज्ञ गांधी ने कहा, शांत हो जाइये. मृत्यु को सामने देख रहे गांधी ने इस घटना के बाद कहा कि ''अगर मैं फोड़ा, फुंसी या बीमारी से मर जाऊं तो कहना कि झूठ का महात्मा था. महात्मा तभी कहना, जब बहादुरी से सीने पर गोली खाकर मरूं और मेरे मुंह से राम निकले.''

गांधी को मृत्यु का भय नहीं था. क्योंकि वह आजाद हिंदुस्तान में भी आजादी की लड़ाई लड़ रहे थे. गांधी के लिए आजादी का मतलब सिर्फ अंग्रेजों से आजादी नहीं था, उनका मतलब था—मनुष्य की मुक्ति. अपने पूरे जीवन गांधी समझाते रहे कि मनुष्य डर की गुलामी में जीता है. इसलिए गीता के श्लोक में जो बात योगेश्वर कृष्ण कहते हैं, वही बात गांधी जी जीवन भर अपने लोगों में बांटते रहे. वह बात थी—अभय होना, डर से मुक्त होना. गांधी इसीलिए बार-बार कहते थे कि जिस दिन पूरा भारत खुद को आजाद मान लेगा, भय से मुक्त हो जाएगा, उस दिन भारत आजाद हो जाएगा, भले ही सत्ता की कुर्सी पर अंग्रेज बैठे रहें.

उनके लिए गुलामी एक व्यवस्था के साथ ही, मानसिकता भी थी. तभी तो भारत में आजादी की लड़ाई में कूदने से पहले उन्होंने 'हिंद स्वराज' जैसी किताब लिखी. और इस किताब में भौतिकवाद की गुलामी से आजाद होने का मंत्र दिया. इसीलिए उन्होंने अपने जीवन के कम से कम 20 साल विशुद्ध रूप से देश में छुआछूत खत्म करने पर खर्च किए.

वे इंसान को उसके ओछेपन से, उसकी गंदगी से, उसकी नीचता से मुक्त कराना चाहते थे. क्योंकि मसीहा यही काम करते आए हैं. अपने वराह अवतार में विष्णु आखिरकार धरती को मैल से ही तो बाहर निकाल रहे हैं. अंगुलिमाल और बुद्ध का संवाद आखिरकार मनुष्य के भीतर मनुष्यता जगाने का ही तो संवाद है. ईसा मसीह सलीब पर लटककर, यानी असल में हारकर, पूरी दुनिया की जीत की नींव रखते हैं. कर्बला की लड़ाई में मुहम्मद साहब के वशंज हार कर भी एक ऐसी बात रख जाते हैं, जो बाद में पूरी दुनिया पर छा जाती है.

बड़े लोग, बड़े काम ही करते हैं. गांधी ने भी बड़ा काम किया. छोटे लोग छोटे काम ही कर सकते हैं. वे या तो बड़े लोगों को पूज सकते हैं या उन पर कीचड़ उछाल सकते हैं. शुरू में वे कीचड़ ही उछालते हैं. लेकिन बड़प्पन की तासीर ऐसी होती है कि वह मलिन नहीं होता. इसीलिए आज हम देखते हैं कि जो गांधी के निंदक थे, आलोचक थे, वे भी उन्हें सम्मान देते हैं. धीरे-धीरे गांधी जी देवकोटि को प्राप्त हो जाएंगे. लोग उनके विचार और संघर्ष को एक कथा की तरह याद रखेंगे, उन्हें देवता की तरह पूजेंगे और उनकी कोई भी बात नहीं मानेंगे. संसार की यही रीति है. ❑

'मानवता की जो कब्र, वही गांधी की भी होगी समाधि'

❑ **अव्यक्त**

जून, 1947 में दिनकर का एक काव्य-संग्रह छपा. केवल चार कविताओं वाले इस संग्रह का नाम था- 'बापू'. इसके छह महीने के भीतर ही गांधी की हत्या हो गई. उनकी हत्या के बाद दिनकर का हृदय क्षोभ से भर उठा. उनकी कलम फिर से चल पड़ी. जीवित गांधी के प्रति व्यक्त किए गए अनुराग भरे शब्दों में उनके कुछ और कठोर शब्द भी जुड़ते चले गए. इन शब्दों का स्रोत थी गांधी की हत्या से उपजी मर्मांतक पीड़ा और आत्मग्लानि. जल्दी ही इस संग्रह का दूसरा संस्करण मई, 1948 में छापा गया.

यह वह दौर था, जब देश में जगह-जगह सांप्रदायिकता की आग लगी हुई थी. भारत का भौगोलिक और राजनीतिक विभाजन भारतीय समाज के द्वेषपूर्ण विभाजन का भी दंश लेकर आया था. द्वितीय विश्वयुद्ध के विनाशकारी परिणामों को पूरी दुनिया भुगत रही थी. हिंसा के इस विकट दौर में केवल बूढ़े गांधी ही थे जो अहिंसा, प्रेम और करुणा की अलख जगाने में लगे हुए थे.

दिनकर जैसा अपेक्षाकृत युवा इसे देखकर अभिभूत था. कहते हैं कि दिनकर ने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान प्रोपगेंडा विभाग में भी कार्य किया था. युद्ध की विभीषिका और इससे जुड़े साम्राज्यवादी और कूटनीतिक छल-प्रपंच को उन्होंने निकट से देखा था. इसलिए दिनकर के काव्य-सृजन का एक बड़ा हिस्सा युद्धमात्र के खिलाफ ही रचा गया है. असल वीरता और वीरता में छिपी कायरता के बीच के बारीक फर्क को दिनकर ने गांधी के माध्यम से ही समझा था. इसलिए उनकी यह किताब गांधी के बहाने हिंसा और द्वेष की प्रवृत्ति की तहें उधेड़ने वाली थी. तत्कालीन भयावह परिस्थितियों का चित्रण उनकी इन पंक्तियों में मिलता है -

'देवालय सूना नहीं, देवता हैं, लेकिन, कुछ डरे हुए ;
दानव के गर्जन-तर्जन से कुछ भीति-भाव में भरे हुए।'

लेकिन इस डर को दूर भगाएगा कौन? तो वे गांधी के लिए कहते हैं,

'मानवता का मरमी सुजान आया तू भीति भगाने को'।

लेकिन लाठी टेककर चलने वाला एक बूढ़ा कैसे यह सब कर सकेगा? इस पर वे कहते हैं—

'तू चला, तो लोग कुछ चौंक पड़े, 'तूफान उठा या आंधी है?'
ईसा की बोली रूह, अरे! यह तो बेचारा गांधी है।'

दिनकर की अन्य कविताओं की भांति ही इस कविता में भी दिनकर के उन्हीं शब्दों, भावों और उपमाओं के दर्शन होते हैं, जो उनकी विशेष पहचान रही है. वही ओज, वही जोश, वही तीव्रता, उग्रता और आवेग यहां भी देखने को मिलते हैं. दिनकर भी अपनी इस शैली को खूब पहचान चुके थे. इसलिए इस पुस्तक की भूमिका में उन्होंने स्वयं लिखा था- 'कविता का एकाध अंश ऐसा है, जिसे स्वयं बापू, शायद, पसंद नहीं करें. किन्तु, उनका एकमात्र वही रूप तो सत्य नहीं है, जिसे वे स्वयं मानते हों. हमारे जाती जीवन के प्रसंग में वे जिस स्थान पर खड़े हैं, वह भी तो भुलाया नहीं जा सकता.'

तो दिनकर की नज़र में जाती जीवन के प्रसंग में गांधी किस स्थान पर खड़े हैं? यह इस संग्रह में जगह-जगह अपने-आप उद्घाटित होता जाता है. वह जाती प्रसंग अथवा सामाजिक और राष्ट्रीय प्रसंग भय, अशांति, घृणा और हिंसा का है, जिसमें गांधी ही उन्हें एकमात्र आशा की किरण नज़र आते हैं, क्योंकि उनकी उपस्थिति मात्र से भय और हिंसा दूर भागती है. मनुष्य तो मनुष्य, पशु-पक्षी को भी गांधी की उपस्थिति में निर्भयता और निश्चिन्तता का अनुभव होता है. दिनकर कहते हैं -

'कोई न भीत, कोई न त्रस्त; सब ओर प्रकृति है प्रेम भरी,
निश्चिन्त जुगाली करती है, छाया में पास खड़ी बकरी।'

कवि दिनकर को गांधी में सबसे ज्यादा क्या आकर्षित करता है? कवि कहता है कि प्रखर बुद्धि वाले मेधावी लोग ही इस दुनिया के लिए संकट बन चुके हैं. वह ज्ञानमात्र पर प्रश्नचिह्न लगाता है. कवि को ईसा और गांधी जैसों की सरलता और उनका त्याग और प्रेम ही आकर्षित करता है. दिनकर कहते हैं -

मानवता का इतिहास, युद्ध के दावानल से छला हुआ,
मानवता का इतिहास, मनुज की प्रखर बुद्धि से छला हुआ।
मानवता का इतिहास, मनुज की मेधा से घबराता-सा,
मानवता का इतिहास, ज्ञान पर विस्मय-चिह्न बनाता-सा।

और जब मनुष्य अपने ही बनाए इस जाल में फंस जाता है. तो गांधी जैसे संतों-महात्माओं की ओर दौड़ता है. कवि कहता है -

मानवता का इतिहास विकल, हांफता हुआ, लोहू-लुहान;
दौड़ा तुझसे मांगता हुआ, बापू! दुःखों से सपदि त्राण।

लेकिन क्या गांधी जैसे व्यक्ति का जीवन जीना आसान होता है? नहीं, बिल्कुल नहीं. उस पर भी उंगलियां उठती हैं, आक्षेप किया जाता है. ऐसे व्यक्तित्वों को भी उकसाया जाता है कि वे प्रतिक्रिया करें. लेकिन यही तो उनकी परीक्षा होती है, और ऐसी परीक्षाओं को गांधी जैसे लोग सहज ही पार कर जाते हैं. कवि इसका साक्षी बनकर कहता है -

ली जांच प्रेम ने बहुत, मगर बापू तू सदा खरा उतरा,
शूली पर से भी बार-बार, तू नूतन ज्योति भरा उतरा।
प्रेमी की यह पहचान, पुरुषता को न जीभ पर लाते हैं,
दुनिया देती है जहर, किन्तु, वे सुधा छिड़कते जाते हैं।
जाने, कितने अभिशाप मिले, कितना है पीना पड़ा गरल,
तब भी नैनों में ज्योति हरी, तब भी मुख पर मुस्कान सरल।

दिनकर गांधी की एक ऐसी जीवंत तस्वीर खींचते हैं, मानो उस तस्वीर से गांधी की देह

नहीं, बल्कि उनके विचार, उनके जीवनादर्श प्रकट होते जाते हैं. यहां गांधी एक ऐसे महामानव के रूप में उभरते हैं, जिनके सामने कवि स्वयं को बहुत ही छोटा पाता है. श्रद्धावनत् होकर वह कह उठता है -

'सामान्य मृत्तिका के पुतले, हम समझ नहीं कुछ पाते हैं,
तू ढो लेता किस भांति पाप, जो हम दिन-रात कमाते हैं।'
कितना विभेद! हम भी मनुष्य, पर, तुच्छ स्वहित में सदा लीन,
पल-पल चंचल, व्याकुल, विषण्ण, लोहू के तापों के अधीन।
पर, तू, तापों से परे, कामना-जयी, एकरस, निर्विकार,
पृथ्वी को शीतल करता है, छाया-द्रुम-सी बाहें पसार।'

कवि को लगता है कि गांधी संघर्ष का एक नया तरीका दुनिया को सिखाने आए हैं. उसे आश्चर्य होता है कि जिस साम्राज्यवादी सत्ता को बड़ी-बड़ी सेनाएं नहीं हरा सकीं, उससे यह एक अर्द्धनग्न आदमी बिना किसी हथियार के लोहा ले रहा है. यहां एक बार फिर से वह बहुत ही अद्भुत तरीके से प्रतीकात्मक रूप में गांधी की बकरी का इस्तेमाल करते हैं—

विस्मय है जिस पर घोर, लौह-पुरुषों का कोई बस न चला,
उस गढ़ में कूदा, दूध और मिट्टी का बना हुआ पुतला।
सारे संबल के तीन खण्ड, दो वसन, एक सूखी लकड़ी,
सारी सेनाओं की प्रतीक, पीछे चलने वाली बकरी।

लेकिन समय की भयावहता कवि को बार-बार डरा देती है. वह डरता है कि कहीं गांधी इन शक्तियों ने हार न जाएं. यदि गांधी सचमुच हार गए, तो क्या होगा? इसपर कवि कहता है -

बापू जो हारे, हारेगा जगती तल का सौभाग्य-क्षेम,
बापू जो हारे, हारेंगे श्रद्धा, मैत्री, विश्वास, प्रेम।
श्रद्धा, विश्वास, क्षमा, ममता, सत्यता, स्नेह, करुणा अथोर,
सबको सहेजकर बापू ने, सागर में दी है नाव छोड़।

कवि ने बापू से इतने अपनापन का नाता जोड़ लिया है कि उसे बहुत कुछ साधिकार कहने का मन करता है. कवि की ये पंक्तियां बहुत छूने वाली हैं -

बापू! मैं तेरा समयुगीन; है बात बड़ी, पर कहने दे;
लघुता को भूल तनिक गरिमा के महासिंधु में बहने दे।
यह छोटी सी भंगुर उमंग, पर, कितना अच्छा नाता है,
लगता है पवन वही मुझको, जो तुमको छूकर आता है।

गांधी की हत्या के अगले दिन यानि 31 जनवरी, 1948 को लिखी गई एक कविता में दिनकर आत्मग्लानि भरे स्वर में कहते हैं -

लौटो, छूने दो एक बार फिर अपना चरण अभयकारी,
रोने दो पकड़ वही छाती, जिसमें हमने गोली मारी।

गांधी की हत्या में कवि स्वयं को भी दोषी करार देता है. लेकिन गांधी के असली हत्यारे उससे छिपे हुए नहीं हैं. कवि जानता है कि गांधी का हत्यारा कोई एक नहीं था. कई थे. गांधी का हत्यारा कोई व्यक्तिमात्र नहीं था. उनकी हत्यारन तो एक संगठित विचारधारा थी. एक प्रवृत्ति थी. वह प्रवृत्ति थी द्वेष की, वह विचारधारा थी घृणा की. इस जहरीली विचारधारा से विषाक्त हो चुके वातावरण का वर्णन कवि ने इसी संग्रह में अन्यत्र करते हुए कहा है -

जल रही आग दुर्गन्ध लिये, छा रहा चतुर्दिक विकट धूम,
विष के मतवाले, कुटिल नाग, निर्भय फण जोड़े रहे घूम।

गांधी की मृत्यु पर, अघटन घटना, क्या समाधान?, शीर्षक से लिखी गई कविता में दिनकर कई जगह पर इस विडंबना पर जोर देते हैं कि हत्यारा 'हिन्दू' था. वे कहते हैं—

'कहने में जीभ सिहरती है,
मूर्च्छित हो जाती कलम, हाय!
हिन्दू ही था वह हत्यारा।'

अन्यत्र वे कहते हैं—

'गोली से डाला मार उन्हें,
उन्मत्त एक हत्यारे ने,
जो हिन्दू था।'

एक स्थान पर फिर से पूछते हैं—

'हिन्दू भी करने लगे अगर ऐसा अनर्थ,
तो शेष रहा जर्जर भू का भवितव्य कौन?'

और एक स्थान पर तो क्षोभ में भरकर कह उठते हैं -

लिखता हूं कुंभीपाक नरक के पीव कुण्ड में कलम बोर,
बापू का हत्यारा पापी था कोई हिन्दू ही कठोर।

कवि को विश्वास है कि गांधी के हत्यारे यदि अब भी गांधी से क्षमा मांग लें, तो उन्हें क्षमा मिल जाएगी. हत्यारों के हृदय-परिवर्तन की आशा लिए वह आह्वान करता है कि अब भी बापू को पहचानो. गांधी की हत्या के सात दिन बाद लिखी इस कविता में दिनकर कहते हैं -

रो-रो कर मांगो क्षमा, अश्रु से करो पितृ-शव का अभिषेक,
अगुणी, कृतघ्न जन के अब भी हैं बापू ही आधार एक।
पहचानो, कौन चला जग से? पापी! अब भी कुछ होश करो,
गति नहीं अन्य, गति नहीं अन्य, इन चरणों को पकड़ो, पकड़ो।

गांधी के प्रति दिनकर के इन भावों की प्रामाणिकता उनके गांधी के समयुगीन होने में भी है. इसे उन्होंने बार-बार कहा भी है. इतना तक कि एक स्थान पर कवि का मन गदगद होकर कह उठता है—

'है धन्य विधाता! जिसने गांधी-युग में हमको जन्म दिया।'

गांधी की हत्या को दिनकर मानवता की हत्या करार देते हुए कहते हैं—

'मानवता की जो कब्र, वही गांधी की भी होगी समाधि।'

लेकिन अब तो उनकी हत्या हो गई. अब हम क्या करें? दिनकर इस कविता में इसका समाधान देते हुए कहते हैं -

'बापू ने राह बना डाली, चलना चाहे संसार चले,
डगमग होते हों पांव अगर तो पकड़ प्रेम का तार चले।'

भारत में गांधी-युग के बाद के युग में हम कहां तक पहुंचे हैं? चौतरफा हिंसा, कपट, घृणा, अविश्वास और संवादहीनता के वातावरण में आज यदि दिनकर जीवित होते, तो क्या फिर से वह इसी प्रेम का ऐसे ही मुक्तकंठ से आह्वान नहीं करते? लेकिन क्या उनका यह आह्वान भांति-भांति के जयकारों की शोर में दब नहीं जाता? अंध-जयकारों के इस युग में हम गांधी की ही तरह दिनकर की भी जय-जयकार भले ही कर सकते हों, लेकिन उनके प्रेमाह्वान को सुनने, समझने और आत्मसात करने की मंशा, धैर्य और ईमानदारी कहां से लाएंगे? ❑

कश्मीर, दलित, आदिवासी, देश की आजादी और महात्मा गांधी

❑ कुरबान अली

जुलाई और अगस्त 1947 की गहमागहमी में जहां एक तरफ अंग्रेज वाइसराय और भारत के शीर्ष नेता आज़ादी और नई सरकार के गठन की तैयारियों में व्यस्त थे, वहीं गांधी जी देश के मुसलमानों, हरिजनों, आदिवासियों और कश्मीरियों को लेकर चिंतित थे। आज़ादी से तीन सप्ताह पहले महात्मा गांधी किसी का जवाब देते हुए खत लिखते हैं तो उसमें गोंड, कोडा, बेत और मांग जैसे आदिवासियों और हरिजनों की स्थिति पर चिंता जताते हैं। उससे एक दिन पहले 22 जुलाई, 1947 को समाजवादी नेता राममनोहर लोहिया के एक पत्र के जवाब में महात्मा गांधी लिखते हैं कि नगा जैसे आदिवासियों के साथ जो पाशविक या मिलीटरी के प्रयोग वाली नीति अपनाई गई है, उससे हिंद का नाश ही होगा।

भारत के दलितों के बारे में महात्मा गांधी की क्या राय थी, यह आज़ादी से क़रीब 16-17 दिन पहले 29 जुलाई, 1947 को दिए गए उनके एक बयान से स्पष्ट हो जाता है। उन्होंने कहा, 'मैं तो कहता हूँ कि एक हरिजन लड़की को गवर्नर-जनरल बना देना चाहिए, लेकिन मैं यह मानता हूं कि आज इस हालत में हरिजन की लड़की को गवर्नर-जनरल नहीं बनाया जा सकता, क्योंकि राजाओं से बात करनी है, और भी कई बड़े-बड़े काम पड़े हैं। हां, जब प्रजातंत्र बन जाएगा तब ऐसा हो सकता है.'

कश्मीर के बारे में महात्मा गांधी की क्या राय थी, वह 29 जुलाई 1947 को दिए गए उनके भाषण से स्पष्ट हो जाता है। अपनी ऐतिहासिक कश्मीर यात्रा से दो दिन पहले 29 जुलाई को अपने प्रार्थना प्रवचन में महात्मा गांधी ने कहा था- 'कश्मीर में राजा भी हैं और रैयत भी. मैं राजा को कोई ऐसी बात नहीं कहने जा रहा हूं कि वे पाकिस्तान में नहीं, भारतीय संघ में सम्मिलित हों। मैं इस काम के लिए वहां नहीं जाऊंगा। वहां राजा तो है, लेकिन असली राजा तो प्रजा है. ...वहां के लोगों से पूछा जाना चाहिए कि वे पाकिस्तान के साथ जाना चाहते हैं या भारतीय संघ में। वे जैसा चाहें, करें. राजा तो कुछ है ही नहीं, प्रजा सब कुछ है। राजा तो दो दिन बाद मर जाएगा, लेकिन प्रजा तो रहेगी ही। कुछ लोगों ने मुझसे कहा है कि यह काम मैं पत्र-व्यवहार के जरिए ही क्यों नहीं करूं। तो मैं कहूंगा कि इस तरह तो मैं पत्र-व्यवहार के जरिए ही नोआखाली का काम भी कर सकता हूं।'

जब पाकिस्तान द्वारा कश्मीर पर हमले की घटनाएं सामने आईं तो महात्मा गांधी ने 26 अक्टूबर, 1947 को पाकिस्तान और भारत दोनों को स्पष्ट तौर पर चेताते हुए कहा था - 'रियासत (कश्मीर) की असली राजा तो उसकी प्रजा है। अगर कश्मीर की प्रजा यह कहे कि वह पाकिस्तान में जाना चाहती है तो दुनिया में कोई ताकत नहीं, जो उसको पाकिस्तान में जाने से रोक सके। लेकिन उससे पूरी आज़ादी और आराम के साथ पूछा जाए। उसपर आक्रमण नहीं कर सकते।उसके देहातों को जलाकर उसे मजबूर नहीं कर सकते। अगर वहां की प्रजा यह कहे, भले ही वहां मुसलमानों की आबादी अधिक हो, कि उसको तो हिन्दुस्तान की यूनियन में रहना है, तो उसको कोई रोक नहीं सकता। अगर पाकिस्तान के लोग उसे मजबूर करने के लिए वहां जाते हैं तो पाकिस्तान की हुकूमत को उन्हें रोकना चाहिए। अगर वह नहीं रोकती है तो सारे का सारा इल्जाम उसको अपने ऊपर ओढ़ना होगा। अगर यूनियन के लोग उसे मजबूर करने जाते हैं, तो उनको रोकना होगा और उनको रुक जाना चाहिए, इसमें मुझे कोई संदेह नहीं है।'

15 अगस्त 1947 को जब देश बंटवारे के दर्द के साथ आज़ाद हुआ तो एक तरफ तो आजादी मिलने की खुशी थी और पूरा देश उसका जश्न मना रहा था तो दूसरी ओर बंटवारे से लहूलुहान एक देश के दो हिस्से सांप्रदायिक हिंसा से झुलस रहे थे। अभी तक सही तौर पर आकलन नहीं हो पाया है कि इस हिंसा और विभाजन में कितने लोगों की जान गयी। मोटे तौर पर कहा जाता है की क़रीब 15 से 20 लाख लोग इस हिंसा में मारे गए और क़रीब डेढ़ करोड़ लोग अपने घरों से बेघर हो गए। लाखों औरतें बेवा हो गईं, लाखों बच्चे यतीम हो गए।

उस समय ब्रिटिश शासन की गुलामी से जिस एक शख़्स के नेतृत्व ने हमें आज़ादी दिलाई थी यानि महात्मा गांधी, वे आज़ादी के इस जश्न में शामिल नहीं थे। वह राजधानी दिल्ली से हजारों किलोमीटर दूर खामोशी के साथ कलकत्ते की गलियों में हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच शांति और भाईचारा कायम करने के काम में लगे हुए थे। दरअसल उस समय देश में हिंदू-मुस्लिम एकता के मुद्दे पर वह मजबूती नजर नहीं आ रही थी जो ब्रिटिश राज के खिलाफ लड़ाई में दिखी थी. आजादी के मौके पर आयोजित समारोह के बारे में गांधीजी का कहना था, 'मैं इस जश्न में शामिल नहीं हो सकता, मुझे यह अच्छा नहीं लग रहा।'

कहा जाता है कि आजादी मिलने से कुछ समय पहले पंडित जवाहरलाल नेहरू और सरदार वल्लभ भाई पटेल ने कलकत्ते में गांधी जी को एक सन्देश भेजा, जिसमें लिखा था.. बापू, आप राष्ट्रपिता हैं। 15 अगस्त 1947, पहला स्वाधीनता दिवस होगा। हम चाहते हैं कि आप दिल्ली आकर हमें अपना आशीर्वाद दें।यह पत्र पढने के बाद महात्मा गांधी ने कहा... कितनी मूर्खतापूर्ण बात है। जब बंगाल जल रहा है, हिन्दू और मुस्लिम एक-दूसरे की हत्याएं कर रहे हैं और मैं कोलकाता के अंधकार में उनकी चीखें सुन रहा हूं, तब मैं कैसे दिल में रोशनी लेकर दिल्ली जा सकता हूं। बंगाल में शांति कायम करने के लिए मुझे

यहीं रहना होगा और यदि जरूरत पड़ी तो सौहार्द और शांति सुनिश्चित करने के लिए अपनी जान भी देनी होगी।

महात्मा गांधी के भगीरथ प्रयासों से नोआखाली में शांति स्थापित हो गई। उनके शांति मिशन की कामयाबी पर लार्ड माउंटबेटन ने 26 अगस्त 1947 को उन्हें एक पत्र लिखा, जिसमें उनकी सराहना करते हुए कहा गया.. पंजाब में हमारे पास पचपन हजार सैनिक हैं लेकिन वहां बड़े पैमाने पर हिंसा हो रही है। बंगाल में हमारी फौज में केवल एक आदमी था और वहां कोई हिंसा नहीं हुई। एक सेवा अधिकारी और प्रशासक के रूप में, मैं इस एक व्यक्ति की सेना को सलाम करना चाहूंगा।'

महात्मा गांधी 15 अगस्त 1947 का जश्न मनाने के लिए आयोजित किसी कार्यक्रम में शामिल नहीं हुए। उन्होंने ये दिन आम दिनों की तरह चरखा कातते हुए उपवास करके बिताया और अपने सहयोगी प्यारेलाल से कहा कि अपनी डायरी में लिख देना कि गांधी आज के दिन खुश नहीं था। हालाँकि कई दिनों से हिंदू-मुस्लिम दंगों की आग में झुलस रहे कलकत्ता शहर में गांधी जी के प्रयासों से काफी हद तक अमन कायम हो गया था लेकिन गांधी जी फिर भी खुश नहीं थे।

15 अगस्त 1947 को महात्मा गांधी ने लंदन में अपनी मित्र अगाथा हैरीसन को पत्र लिखा और कहा, 'पूजा के साथ उपवास रखना भी जरूरी है। फलों का रस लेने के बाद भी ऐसा कहा जा सकता है और इसके बाद गरीब-गुरबों के संघर्ष से जुड़ने और समर्पण के लिए चरखा कातना जरूरी है। इसलिए मुझे, जितना चरखा मैं रोज कातता हूं, उससे कभी संतुष्ट नहीं होना चाहिए और अपने दूसरे कामों के साथ जितना हो सके, उतना इसे करना चाहिए।

उसी दिन कलकत्ता के रामेंद्र जी सिन्हा को महात्मा गांधी ने एक चिट्ठी लिखी (जिनके पिता की दंगों को रोकने की कोशिश के दौरान जान चली गई थी।) बापू ने लिखा, 'आपके पिता में वीरों वाली अहिंसा थी। ऐसे लोग कभी नहीं मरते। उनके लिए शरीर के नाश का कोई अर्थ नहीं है। इसलिए ऐसे वीर पिता की मृत्यु के लिए आपका या आपकी मां का या फिर किसी का भी शोक करना ठीक नहीं है। अपनी इस मृत्यु से उन्होंने ऐसी समृद्ध विरासत छोड़ी है जिसके बारे में मुझे आशा है कि आप सब लोग खुद को उसके योग्य साबित करेंगे। सबसे अच्छी सलाह मैं यही दे सकता हूं कि आज हमें जो आजादी मिली है, उसको बनाए रखने के लिए आप सबको हर मुमकिन कोशिश करनी चाहिए और जो पहला काम आप कर सकते हैं वह है, अपने पिता की वीरता का अनुकरण। अगर आप के प्रियजनों की मृत्यु के लिए आपको उचित न्याय मिलता है तो यह भी अपने आप में बड़ी मुश्किलों से हासिल की हुई आजादी को बनाए रखने में एक योगदान होगा।'

पश्चिम बंगाल सरकार के कुछ मंत्री जब महात्मा गांधी से मिलने आये तो उन्हें सलाह देते हुए बापू ने कहा, 'आज से आपको कांटों का ताज पहनना है. सत्य और अहिंसा को बढ़ावा देने के लिए निरंतर कोशिश करते रहें। विनम्र रहें। धैर्यवान बनें। इसमें कोई शक नहीं कि ब्रिटिश राज ने आपकी कड़ी परीक्षा ली है, लेकिन आगे भी यह परीक्षा बार-बार होती रहेगी। सत्ता से सावधान रहें। सत्ता भ्रष्ट बनाती है। इसकी चमक-दमक में खुद को फंसने मत दें। आपको याद रखना है कि आपको भारत के गांवों में रह रहे गरीबों की सेवा के लिए यह सत्ता मिली है। ईश्वर आपकी सहायता करे।'

पश्चिम बंगाल के नए राज्यपाल सी राजगोपालाचारी से मुलाकात करके गांधी जी ने उन्हें कलकत्ता में हो रहे दंगों को रोकने पर बधाई दी। सारी दुनिया गांधीजी के इस काम को चमत्कार कह रही थी लेकिन उनका कहना था कि उन्हें तब तक तसल्ली नहीं होगी, जब तक हिंदू और मुसलमान एक दूसरे के साथ सुरक्षित महसूस नहीं करेंगे और अपने घर लौटकर पहले की तरह ही जिंदगी बसर नहीं करने लगेंगे। उनका कहना था कि अभी भले ही जोश दिखाया जा रहा हो, लेकिन जब तक दिल पूरी तरह नहीं मिलते, तब तक आगे फिर हालात बिगड़ने की आशंका है।

दिन में दो बजे, भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के कुछ सदस्यों के साथ गांधीजी की बातचीत हुई। इसमें गांधीजी ने कहा कि राजनीतिक कार्यकर्ता साम्यवादी हों या समाजवादी, उन्हें आज से सारे मतभेद भुलाकर बड़ी कोशिशों से हासिल हुई इस आजादी को मजबूत बनाने पर ध्यान देना चाहिए। उनका कहना था, 'क्या हम इस आज़ादी को बिखरने देंगे?' कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों ने महात्मा गांधी से पूछा कि क्या वे आज आज़ादी का जश्न नहीं मनाएंगे? इस पर उन्होंने कहा, 'मैं इस हर्षोल्लास में भाग नहीं ले सकता, जो कि एक दुःखद प्रसंग है.' ठीक एक दिन पहले यानी 14 अगस्त को यहीं पर एक खचाखच भरी प्रार्थना-सभा में उन्होंने कहा था - 'कल का दिन विदेशी जुए से मुक्ति के लिए तय किया गया दिन है। इसलिए वह एक महान दिन है। आप बेशक उसे बहुत धूमधाम से मनाएं।लेकिन वह ऐसा दिन होगा, जिस दिन इन दोनों ही देशों के कंधों पर एक बड़ा भारी बोझ पड़ने वाला है। मैं आप सबसे अनुरोध करूंगा कि कल के दिन आप समस्त भारत के कल्याण के लिए 24 घंटे का उपवास रखें, दिन में प्रार्थना करें और जहां तक बन सके, यह दिन चरखा कातने में बिताएं।'

15 अगस्त को ही दिन में कुछ छात्रों से बातचीत करते हुए गांधीजी ने बताया कि क्यों अब टकराव तुरंत रुकना चाहिए। उनका कहना था, 'हमारे पास अब दो देश हैं और दोनों में ही हिंदू और मुस्लिम नागरिकों को रहना है। अगर ऐसा है तो इसका मतलब है, 'टू नेशन थ्योरी या द्विराष्ट्रवाद' की अवधारणा का अंत। छात्रों को विचार करना चाहिए और अच्छी तरह से विचार करना चाहिए। उन्हें ख्याल रखना चाहिए कि उनसे कोई गलत काम न हो।' गांधी जी ने यह भी कहा कि भारत में रहने वाले किसी व्यक्ति को सिर्फ इसलिए परेशान करना गलत है कि उसका धर्म अलग है। छात्रों को एक ऐसा नया भारत बनाने के लिए हर मुमकिन कोशिश करनी चाहिए जिस पर हर कोई गर्व करे।

शाम को प्रार्थना सभा में महात्मा गांधी ने हिंदुओं और मुसलमानों में हुए मेलजोल पर कलकत्ता को बधाई दी। हिंदुओं और मुसलमानों ने एक जैसे जोश के साथ तिरंगा

लहराया और नारे लगाए। इससे भी बड़ी बात यह हुई कि मुसलमान अपने हिंदू दोस्तों को मस्जिदों में ले जा रहे थे और हिंदू अपने मुसलमान मित्रों को मंदिरों में। इन खबरों ने गांधी को खिलाफत आंदोलन के समय की हिंदू-मुस्लिम एकता की याद दिला दी। बल्कि कहा जाए तो इस एकता का महत्व खिलाफत के समय की एकता से भी ज्यादा था। इसकी सीधी वजह यह थी कि हिंदुओं और मुसलमानों, दोनों को ही दंगों का जहर पीना पड़ा था।उसके बाद दोस्ती का यह अमृत तो उन्हें और भी अच्छा लगना चाहिए था।गांधी जी ने उम्मीद जताई कि हावड़ा सहित पूरा कलकत्ता सांप्रदायिकता के इस राक्षस से हमेशा के लिए पूरी तरह आजाद हो जाएगा। हालांकि वे इन खबरों से दुखी थे कि लाहौर में सांप्रदायिक उन्माद की यह आग अब भी धधक रही है।उन्होंने उम्मीद जताई कि कलकत्ते के इस उदाहरण का पंजाब और भारत के बाकी हिस्सों पर भी असर होगा। इसके बाद गांधीजी ने चटगांव में हुए दंगों का जिक्र किया और कहा कि यह पूरे बंगाल का कर्तव्य है कि वह चटगांव के लोगों के दर्द को अपना दर्द समझे।

आज़ादी से करीब एक महीने पहले 20 जुलाई, 1947 को महात्मा गांधी ने कहा था- 'जिस आज़ादी के लिए आप लड़ रहे थे वह तो मिल गई और राजनीतिक आज़ादी के साथ-साथ आर्थिक आज़ादी भी मिल जाएगी। यह सब कुछ होने पर भी मैं आज़ादी के दिन यानी 15 अगस्त को खुशी नहीं मना सकता। मैं आपको धोखा नहीं देना चाहता, इसलिए मैं जाहिरा तौर पर यह बात कह रहा हूं। मगर मैं आपसे यह नहीं कह सकता कि आप भी खुशी न मनाएं। आखिर सब काम मेरी मर्जी के मुताबिक थोड़े ही न होते हैं। ...यह न सोचें कि गांधी क्यों नहीं खुशी मनाता. अगर कोई न मनाना चाहे तो कांग्रेस किसी को मजबूर तो करती नहीं, लेकिन मेरी अपनी राय है कि यह दिन खुशी मनाने के लिए नहीं है। ...मैं तो उस दिन आज़ादी मिली समझूंगा जिस दिन हिन्दू और मुसलमानों के दिलों की सफाई हो जाएगी।' 27 जुलाई, 1947 को उन्होंने कहा, 'जब हमारे दिल में किसी प्रकार का जहर नहीं होगा, तभी तो हम 15 अगस्त का दिन दिल खोलकर मना सकेंगे।'

कोई कह सकता है कि भारत के विभाजन ने हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच जिन अप्रिय परिस्थितियों को जन्म दिया था, गांधी जी उसके तात्कालिक कारणों की वजह से ऐसा कह रहे होंगे। लेकिन गहराई से जानने पर समझ में आता है कि यह केवल इतना भर नहीं था। जानकार लोगों का कहना है कि गांधी के अर्थों वाले स्वराज का मतलब केवल अंग्रेजों से लेकर भारतीयों के हाथ में सत्ता सौंप दिया जाना भर नहीं था। तब से करीब चार दशक पहले गांधी ने 'हिन्द स्वराज' में अपने अर्थों वाली आज़ादी को खोल-खोल कर समझा दिया था।

24 जुलाई, 1921 को गुजराती 'नवजीवन' में गांधी ने स्वराज का मतलब बताते हुए लिखा, स्वराज का (प्रचलित अर्थों में) एक अर्थ देश की बहुसंख्यक जनता का शासन भी होता है. जाहिर है, जहां बहुसंख्यक जनता नीति भ्रष्ट हो या स्वार्थी हो, वहां उनकी सरकार अराजकता की स्थिति ही पैदा करेगी, और कुछ नहीं।'

6 मार्च 1931 को भारतीय एवं विदेशी पत्रकारों के साथ एक प्रेसवार्ता में महत्मा गांधी ने स्वराज का अर्थ बताते हुए कहा था, 'जहां

...शेष पृष्ठ 10 पर

रीवा की घटना नफरत और षड्यंत्र की परिचायक

वर्ष 1948 में महात्मा गांधी के अस्थि अवशेषों का एक हिस्सा मध्य प्रदेश के रीवा स्थित बापू स्मारक भवन में रखा गया था. इन अस्थि अवशेषों के चोरी होने की ख़बर है. राज्य पुलिस ने इसकी पुष्टि की है. यह घटना दो अक्टूबर की है, जब कृतज्ञ देश राष्ट्रपिता की 150वीं जयंती मना रहा था।

इस मामले में दर्ज प्राथमिकी के अनुसार न सिर्फ अस्थि अवशेषों की चोरी की गयी बल्कि गांधी की तस्वीर से छेड़छाड़ भी की गई. उनकी तस्वीर पर हरे रंग से 'राष्ट्रद्रोही' लिख दिया गया. रीवा स्थित बापू भवन की देखरेख करने वाले मंगलदीप ने बताया कि मैंने सुबह भवन का गेट खोला था क्योंकि उस दिन गांधी जयंती थी. रात करीब 11 बजे जब वापस आया तो देखा कि गांधी जी की अस्थियां गायब थीं और उनकी तस्वीर को भी खराब किया गया था। इस घटना की पुलिस में शिकायत दर्ज करवायी गयी है।

उल्लेखनीय है कि मृत्यु के बाद गांधीजी की अस्थियों को नदियों में विसर्जित नहीं किया गया था. उन्हें अलग-अलग हिस्सों में बांटकर भारत में बने गांधी के विभिन्न संग्रहालयों में रखा गया था, इन्हीं में से एक रीवा का बापू स्मारक भवन भी है.

दक्षिण अफ्रीका के डरबन शहर में स्थित फीनिक्स गांधी आश्रम में 2 अक्टूबर को आयोजित एक अंतर्राष्ट्रीय सेमीनार में भाग लेने के लिए सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष महादेव विद्रोही एक प्रतिनिधि मंडल के साथ वहां मौजूद हैं। डरबन से जारी एक बयान में उन्होंने रीवा के बापू स्मारक भवन में अंजाम दिये गये इस जघन्य कृत्य की कड़े शब्दों में भर्त्सना की है। उन्होंने कहा है कि गांधी को खत्म करना संभव नहीं है। इस घटना से नफरत और षड्यंत्र की बू आती है और इतनी बड़ी घटना के बाद भी सरकार की चुप्पी से उसकी मौन सहमति का पता चलता है। यह घटना हिंसक, आपराधिक और विनाशकारी है। हम प्रार्थना करते हैं कि अपराधियों का हृदय परिवर्तन हो और वे स्व प्रेरणा से अस्थि अवशेष वापस कर दें। महात्मा गांधी ने लिखा है कि मनुष्य एक जानवर के रूप में हिंसक है किन्तु भावनात्मक रूप से अहिंसक होता है। जिस क्षण उसके अंदर भावना पैदा होगी, वह हिंसक नहीं रह जायेगा, या तो वह अहिंसा की ओर मुड़ेगा अथवा अपना विनाश करेगा। इस सेमीनार में भाग ले रहे दुनिया के दूसरे देशों के अनेक प्रतिनिधियों द्वारा हस्ताक्षरित एक बयान में उन्होंने कहा है कि सर्व सेवा संघ इस घटना की निन्दा करता है और स्थानीय प्रशासन तथा सरकार से मांग करता है कि दोषियों के विरुद्ध तत्काल कार्यवाही की जाय और गांधी की चोरी गयी पवित्र अस्थियां बरामद करके यथाशीघ्र रीवा स्थित बापू भवन में पुनः स्थापित की जाय।

आचरण की शुद्धता स्वराज की पहली सीढ़ी है

❑ मदन मोहन वर्मा

जब कभी जोश में आकर हम किसी से झगड़ा कर लेते हैं, तो झगड़े के साथ ही साथ एक प्रकार की गुलामी शुरू हो जाती है। झगड़े के बाद बचाव की शुरूआत करनी पड़ती है। हम नेता, विधायक, सांसद से गुहार लगाते हैं। सिपाही, दरोगा, इंस्पेक्टर की खुशामद करते हैं। फिर वकील, कोर्ट-कचहरी, जज की खुशमद करते हैं। ऐसा कोई मुकदमा यदि कुछ वर्ष चला, तो उतने वर्ष तक हमारी खुशामद चलती रहती है। समय, धन और शक्ति की बरबादी होती रहती है। जीवन गुलामी का जीवन बन जाता है।

जब कोई व्यक्ति नशा करता है तो समाज तथा परिवार के सामने उसका सिर झुकता है, उसका अपराधबोध खुद के भीतर शर्मिंदगी पैदा करता है। यह शर्मिंदगी भी गुलामी ही है। हम चाहे गलती करके सिर झुकायें या अपराधबोध से ग्रस्त होकर सिर झुकाना पड़े, जीने की यह प्रक्रिया ही गुलामी है। हम कोई ऐसा कार्य नहीं करेंगे, जिससे हमें किसी के सामने सिर झुकाना पड़े, ऐसा हमारा संकल्प होना चाहिए। हमें संकल्पबद्ध होना चाहिए कि हम कोई ऐसा कार्य नहीं करेंगे, जिससे कोई हमारी तरफ उंगली उठा सके। बिना झूठ बोले भी जीवन जिया जा सकता है। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए छोटा रास्ता (शार्टकट) चुनने की प्रवृत्ति हमें गुलामी की तरफ ले जाती है, जबकि लंबा किन्तु सत्य का मार्ग गुलामी से बचा लेता है। जो झूठ नहीं बोलता, उसका जीवन झूठे लोगों से बहुत बेहतर होता है। देखें तो, जीवन में झूठ बोलने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। सत्य की गरिमा ही अलग होती है।

गांधीजी ने अपनी कमजोरियों और गलतियों का ब्योरा अपनी लेखनी से खुद लिखा। उन्होंने सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र की तरह सत्य को जिया। दांव-पेंच से भरा हुआ जीवन, व्यर्थ का जीवन है। हम अपने झूठे स्वाभिमान, अहंकार के कारण सरल जीवन व्यतीत नहीं कर पाते। झूठे आडंबर को छिपाने के लिए जीवन में व्यर्थ के आडंबर करते रहते हैं और अंदर से खोखला जीवन जीते चले जाते हैं। जबकि स्वच्छ, पवित्र और निर्मल जीवन प्रपंचरहित होता है। कोई व्यक्ति झूठ, फरेब, मक्कारी को दुनिया से तो छिपा सकता है, परंतु स्वयं से नहीं छिपा सकता। व्यक्ति अपने झूठ, पाप के अपराधबोध से अंदर ही अंदर घुटते हुए खोखला हो जाता है, जबकि सच्चा, पवित्र जीवन जीने वाला व्यक्ति नैतिकता बोध से अंदर ही अंदर मजबूत होता है। अपनी चेतना से बड़ा कोई न्यायालय नहीं है। दुनिया के न्यायालय गलत-सही का निर्णय करने में भले ही देर लगायें, परंतु चेतना का न्यायालय गलत-सही का निर्णय तुरंत कर देता है।

हम सबके जीवन में ऐसी बहुत-सी जिम्मेदारियां और समस्याएं होती हैं, जिनका निदान हम नहीं कर पाते हैं। इसलिए अन्य समस्याओं को क्यों आमंत्रित करें? गुलाम बनाने वाली मानसिकता को उखाड़ फेंकें, आजाद बनें, निर्भय बनें। गंदगी से, गंदी आदतों से, झूठ-मक्कारी से, अपने अंदर के खोखलेपन से, निजात पाने का संकल्प लें।

गांधीजी कहा करते थे कि कोई भी कागजी कार्रवाई हमें 'स्वराज' नहीं दे सकती। धुंआधार भाषण हमें स्वराज्य के योग्य नहीं बना सकते। हमारा अपना आचरण ही हमें स्वराज के योग्य बनायेगा। अच्छे चरित्र व आचरण के साथ जीना ही आजादी है, बुरे चरित्र व आचरण के साथ जीना ही गुलामी है।

और यह आजादी प्राप्त करने के लिए करना क्या है? जो महापुरुष हुए हैं—महात्मा बुद्ध, ईसा मसीह, सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र, सुकरात, भगवान राम, मदर टेरेसा, मार्टिन लूथर किंग, बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर, श्रवण कुमार, इन सभी महापुरुषों के जरा-जरा से अंश अपने अंदर आत्मसात कर लेने से हम महापुरुष तो नहीं बन जायेंगे, लेकिन एक अच्छे इंसान के रूप में प्रतिबिम्बित हो सकते हैं।

गांधीजी के व्यक्तित्व में महात्मा बुद्ध की करुणा, ईसा मसीह की दया, सत्यवादी राजा हरिश्चन्द्र का सत्य, मदर टेरेसा की सेवा, भगवान राम की मर्यादा, भगवान कृष्ण का राजनीतिक कौशल, गीता का निष्काम कर्म, भक्तिमार्ग, योगमार्ग, महावीर की अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य जैसे गुण समाहित थे। संसार के सभी सकारात्मक महानायकों के गुणों को समाहित करते हुए उन्होंने स्वयं का निर्माण किया। सभी महापुरुषों का जो महायोग बनता है, उसी का नाम गांधी है। ❑

... पृष्ठ 9 का शेष

तक मैं समझता हूं, पूर्ण स्वराज के पूरे अर्थ को व्यक्त करनेवाला शब्द या शब्द-समूह अंग्रेजी भाषा में नहीं है। इसलिए मैं सिर्फ इसका एक अर्थ समझा सकता हूं। स्वराज का शब्दार्थ है अपने आप पर शासन करना. ... स्वराज पवित्र शब्द है, वैदिक शब्द है। इसका अर्थ है आत्मशासन या आत्मनियंत्रण, न कि सभी नियंत्रणों से मुक्ति जैसा कि बहुधा 'इंडिपेंडेंस' का अर्थ किया जाता है।'

इसी माह 22 मार्च, 1931 को गुजराती अख़बार 'नवजीवन' में महात्मा गांधी ने आम जनता को आज़ादी का वास्तविक अर्थ बताते हुए लिखा था, 'मेरी नजर में स्वराज की प्राप्ति के लिए राजा और प्रजा दोनों की शिक्षा-दीक्षा में बहुत अधिक बदलाव की जरूरत है। लुटेरे और लुटने वाले दोनों अंधेरे में भटक रहे हैं। ये दोनों रास्ता भूल गए हैं। दोनों में से एक की भी स्थिति सहन करने के योग्य नहीं है। पर राजवर्ग और धनिकवर्ग के गले यह बात जल्दी नहीं उतरेगी। एक के गले उतरी तो दूसरे के अपने आप उतर सकेगी, यह सोचकर मैंने रंक या गरीब की सेवा पसंद की है। सब राजा नहीं हो सकते, लेकिन 'सब' में तो सभी के समा सकने की गुंजाइश है। इसलिए यदि गरीब को अपने हक का और साथ ही अपने कर्तव्य का भान हो जाये, तो आज ही स्वराज है। ❑

चेतावनी

ग्रेता थनबर्ग

जलवायु परिवर्तन के खतरों पर विश्व के हुक्मरानों को आईना दिखाता बचपन

❑ कन्हैया कुमार

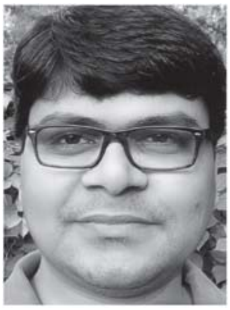

ग्रेता के बारे में सोशल मीडिया पर टिक टॉक प्रेमी और ट्रोल आर्मी अफवाह फैलाने में जुट गई है। कोई उसे लेफ्टिस्ट बोल रहा तो कोई कैपीट-लिस्टों का एजेंट बोल रहा, कोई प्रोपेगंडा बोल रहा तो कोई बोल रहा है कि वह बहुत अमीर परिवार से हैं, इसलिए इतना ग्रेता ग्रेता शोर हो रहा है। मैंने ग्रेता के बारे में जानकारी जुटाने का प्रयत्न किया। मुझे ग्रेता के बारे में एक आर्टिकल पढ़ने को मिला जिसमें उनके बारे में शुरुआती जानकारियां लिखी गयी हैं। जैसे कि ग्रेता को ग्लोबल वार्मिंग और क्लाइमेट चेंज के बारे में तब पता चला, जब वे आठ बरस की थीं। ये जानकारी उन्हें उनके स्कूल में क्लाइमेट पर दिखाई गयी डॉक्यूमेंट्री से मिली। ग्रेता मितभाषी हैं और अक्सर क्लास में पीछे बैठ के पढ़ा-सुना-देखा करती हैं। जैसे जैसे उनकी जानकारी क्लाइमेट पर बढ़ती गयी, वे परेशान होती गयीं और ग्यारह बरस की उम्र में गहरे अवसाद (डिप्रेशन) की शिकार हो गयी जिसमें एक कारण यही ग्लोबल वार्मिंग/क्लाइमेट चेंज का तनाव भी था। इसी वजह से वह स्कूल के क्लास छोड़ दिया करती थी।

यहां यह बताना जरूरी है कि ग्रेता की मां फेमस ऑपेरा सिंगर और पिता ऐक्टर हैं। इन दोनों का पर्यावरण विषय से कोई संबंध नही है। लेकिन ग्रेता उस महान वैज्ञानिक स्वन्ते अरहेनिस की दूर की संबंधी बताई जाती है, जिसने सबसे पहले कार्बन डाइऑक्साइड की मात्रा बढ़ने से वातावरण में तापमान बढ़ने की बात दुनिया को बताई, जिसका प्रायोगिक सत्यापन बाद में डेविड कीलिंग नाम के वैज्ञानिक ने 1960 में किया।

जब अवसादग्रस्त ग्रेता से बात की जाती थी तो वह क्लाइमेट क्राइसिस पर गहरी चिंता जाहिर करती। क्लाइमेट क्राइसिस पर बात करने पर ग्रेता अवसाद के दौरे से मुक्त होती। धीरे-धीरे ग्रेता के माता पिता भी क्लाइमेट क्राइसिस के प्रति जागरूक हो गए। ग्रेता शुद्ध शाकाहारी भोजन करती हैं और उनकी इस

आदत को बाद में उनके पैरेंट्स ने भी अपना लिया। ग्रेता की मां पूरी दुनिया भर में शो करती थी लेकिन क्लाइमेट क्राइसिस से प्रभावित होकर उन्होंने हवाई यात्राएं छोड़ दीं और अपने सारे शो स्वीडन के स्टॉकहोम तक सीमित कर दिये।

मई 2018 में ग्रेता ने एक स्वीडिश न्यूज़ पेपर द्वारा आयोजित क्लाइमेट राइटिंग कम्पटीशन में भाग लिया। इस प्रतियोगिता में ग्रेता भी एक विनर थीं। ग्रेता का निबंध' We know — and we can do something now' न्यूज़ पेपर में छपा और ये ग्रेता की पहली पब्लिक पहचान थी। इससे प्रभावित होकर बो थोरें नाम के एक क्लाइमेट एक्टिविस्ट ने ग्रेता से संपर्क किया। और क्लाइमेट क्राइसिस के बारे में 'स्कूल हड़ताड़' का आइडिया दिया। ग्रेता को यह आइडिया भा गया। ग्रेता ने अन्य बच्चों को स्कूल स्ट्राइक के लिए जुटाना चाहा पर कोई साथ न आया। बिना हतोत्साहित हुए ग्रेता ने अकेले ही स्कूल स्ट्राइक शुरू कर दी। यह तारीख थी 20 अगस्त 2018 की। वह उस दिन स्कूल न जाकर स्वीडिश पार्लियामेंट के बाहर एक तख्ती में लिखे संदेश 'क्लाइमेट के लिए स्कूल स्ट्राइक' के साथ वह पूरे दिन बैठी रही। लोग और पत्रकार ग्रेता की फ़ोटो खींचकर सोशल मीडिया और अखबार में डालने लगे। अगले दिन ग्रेता अकेली न रही। लोग ग्रेता की शुरू की गई मुहिम से जुड़ते गए। 9 सितंबर 2018 को स्वीडन में चुनाव प्रक्रिया पूरी हुई तब तक ग्रेता की हड़ताल के 21 दिन हो चुके थे। अब ग्रेता को काफी लोग जानने लग गए थे। ग्रेता की मां की सोशल मीडिया पर फैन फॉलोइंग लाखों में है और उनकी पोस्ट की गई ग्रेता की तस्वीरें/वीडियो वायरल हो गए। फिर एक दिन ग्रेता ने हज़ारों लोगों के सामने एक भाषण दिया। ग्रेता ग्लोबल होती गयी। 15 मार्च 2019 को 128 देशों के 2200 से ज्यादा शहरों में मेगा स्कूल हड़ताल हुई, जिसमें करीब 16 लाख स्कूली बच्चों ने भाग लिया। ग्रेता जिस हिम्मत और सीधे सपाट तरीके से अपनी बात दुनिया को समझा रही थी, वह काबिले तारीफ है।

दिसंबर 2018 में हुए यूनाइटेड नेशन्स के 24वें सम्मेलन में ग्रेता ने जोरदार भाषण दिया। अपनी बात शुरू करते हुए ग्रेता ने कहा बहुत से लोग कहते मिलेंगे की स्वीडन तो एक छोटा सा देश है और अकेले स्वीडन के बस का कुछ नही है। परंतु मैंने अपने अब तक के जीवनकाल में यह सीखा है कि बदलाव के लिए छोटा बड़ा जैसा कुछ नही होता। और सोचिये अगर कुछ बच्चों की स्कूल छोड़ने की गूंज पूरी दुनिया मे पहुँच सकती है तो अगर हम सब एक साथ आ जाएं तो क्या नही कर सकते हैं।

लेकिन ऐसा करने के लिए हमें अपनी बात को लोगों से साफ साफ कहना जरूरी है, चाहे वह बात कितनी ही कड़वी क्यों न हो। पर्यावरण के नाम पर आजकल राजनेता हरित आर्थिक विकास जैसे उलझाने वाले शब्द बोलकर अपने कर्तव्यों की इतिश्री कर ले रहे हैं क्योंकि इन्हें अपनी प्रसिद्धि खोने का डर है। ये लोग वही पुराने घिसे पिटे विचारों से आगे बढ़ने की बात घुमा फिरा के करते रहते हैं, जिससे हमें अधिक नुकसान हो रहा है। अब बात उस हद तक पहुंच गई है कि हमें जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए आपातकालीन ब्रेक लगाने की जरूरत आन पड़ी है। वहां उपस्थित लोगों को इंगित करते हुए ग्रेता ने कहा कि आप बड़े लोगों में ऐसा कहने का साहस नही हो पा रहा है, इसलिए ये जिम्मेदारी हम बच्चों पर आ गयी है। मुझे अपनी प्रसिद्धि खोने का रंच मात्र भी लोभ नहीं, क्योंकि मेरा इस पर ध्यान ही नही है। मेरी पूरा ध्यान और चिंता जलवायु परिवर्तन और उससे हो रहे दुष्प्रभावों पर है। आज समस्त मानव सभ्यता कुछ चंद लोगों के धन लोभ के कारण खतरे में है। आज लोग प्राकृतिक संपदा का अंधाधुंध दोहन करके धन संचय में रत हैं जिससे कि स्वीडन जैसे धनी देशों के लोग विलासितापूर्ण जीवन जी सकें। लेकिन ये कुछ चंद लोगों का विलासितापूर्ण जीवन हम असंख्य बच्चों के लिए अभिशाप है। सोचिये, साल 2078 तक मैं 75 साल की होऊँगी और अगर मेरे बच्चे हुए तो हो सकता है कि वे उस वक्त मेरे साथ हों। और तब वे मुझसे बहुत कठिन सवाल पूछेंगे कि आप के वक्त के बड़े लोगों ने, आपने, हम बच्चों के लिए, जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपटने के लिए कुछ सार्थक क्यों नही किया, जबकि आपके पास तब भी पर्याप्त वक्त था। आप लोग कहते हैं कि आप अपने बच्चों से बहुत प्यार करते हैं और उन्हीं बच्चों की आंखों के सामने ही उनका सब कुछ नष्ट किये जा रहे हैं। आप बड़े नेता लोग राजनीतिक पचड़ों में व्यस्त हैं और आज करने की जरूरतों को प्रमुखता नही दे रहे हैं। किसी समस्या के निदान के लिए सबसे पहले उसे समस्या मानना जरूरी है और आप लोग जलवायु परिवर्तन की समस्या पर गोलमोल बातें बना के निकल लेते हैं। डीजल, पेट्रोल जैसे जीवाश्म ईंधनों को हमें जमीन के अन्दर बचाये रखने की फौरी आवश्यकता है क्योंकि इस पर सिर्फ आप लोगों ही का नहीं, आने वाली पीढ़ियों का भी उतना ही हक है। और अगर आज के सिस्टम में इस समस्या का हल नहीं मिल रहा तो हमें यह सिस्टम ही बदल देना चाहिए। एक बात पर आप लोग ध्यान दें कि मैं यहां आप बड़े नेताओं से दया की भीख मांगने नही आई हूँ। आप लोगों ने पहले भी हम बच्चों को नजरअंदाज कर दिया है और भविष्य में भी ऐसा करने से गुरेज न करेंगे। हमारे पास अब बहाने भी नही बचे हैं और निर्णय लेने का वक्त भी खत्म होने के कगार पर है। हम बच्चे यहां आप लोगों को ये बताने आए हैं कि परिवर्तन की शुरुआत हो चुकी है। आपकी मर्जी, चाहे आप इसे पसंद करें या न करें। जनता के पास ही वास्तविक शक्ति है।

मई 2019 में वियना में हुई R 20 विश्व शिखर सम्मेलन में बोलते हुए ग्रेता ने लोगों को चेताते हुए कहा कि जलवायु परिवर्तन आपातकाल जैसा संकट है, लेकिन इससे निपटने के तरीके आपातकाल जैसे नही उठाये जा रहे हैं। आप लोगों से जब जलवायु परिवर्तन पर बात की जाती है तो आप कहते हैं कि हां, आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं और उसके बाद ही आप लोग एयरपोर्ट का विस्तार करने का निर्णय लेते हैं, नई कोयले की खदानें खोदने की मंजूरी देते हैं, हवाई जहाज पर बैठ के फुर्र होते रहते हैं। आपातकाल में काम इस तरह से नही किये जाते हैं। आप लोग जलवायु परिवर्तन को लेकर बिल्कुल भी गंभीर नही हैं। आप लोग इस तरह से काम करते रहेंगे तो आम लोगों को आपातकाल जैसा महसूस ही नही होगा। हमें यह स्वीकार करना होगा कि जलवायु परिवर्तन की लड़ाई में हम दिन प्रतिदिन हार रहे हैं। अब हमे शब्दों और संख्याओं में बात करना बंद करना होगा, क्योंकि हमारे पास अब इतना वक्त नही है। अतः हमें इंतज़ार न करके कुछ वास्तविक करना होगा। हम नौजवान अब जाग चुके हैं और हम आपसे वादा करते हैं कि हम आप बड़ों को इस मसले पर पीछे नहीं हटने देंगे।

अभी इसी सितंबर 2019 में न्यूयार्क में यूनाइटेड नेशन्स की क्लाइमेट ऐक्शन समिट में विश्व नेताओं को संबोधित करते हुए ग्रेता ने चेताया कि हम आप नेताओं पर कड़ी नजर रखे हुए हैं। आप लोग बिल्कुल ही गलत कर रहे हैं। मुझे आज यहां नही होना चाहिए। मुझे सागर के उस पार अपने स्कूल लौट जाना चाहिए था लेकिन आप लोग कुछ करने के बजाय हम नौजवानों से आशा कर रहे हैं। आपको ऐसा करने की हिम्मत कैसे हुई? आपने अपनी खोखली बातों से हमारा बचपन लूट लिया है। जलवायु परिवर्तन से पूरी दुनिया के लोग त्रस्त हैं। लोग मर रहे हैं। पूरा का पूरा पारिस्थितिकी तंत्र खत्म होता जा रहा है। हम सामूहिक विनाश की तरफ बढ़ रहे हैं और आप लोगों को सिर्फ धन केंद्रित आर्थिक विकास की ही चिंता है। आपको ऐसा करने की हिम्मत कैसे हुई? तीस साल से विज्ञान जलवायु परिवर्तन के दुष्परिणामों पर बिल्कुल स्पष्ट बोल रहा है लेकिन आप लोगों की इस मसले पर कोई स्पष्ट नीति ही नही है। आप लोग कहते हैं कि आप हम लोगों की चिंताओं से भली भांति अवगत हैं लेकिन मुझे आपकी बातों पर बिल्कुल भी विश्वास नही होता। आप लोग कैसे सब कुछ समझते हुए भी कुछ नही कर रहे हैं। आप लोग प्रचारित कर रहे हैं कि अगले दस सालों में हम कार्बन-उत्सर्जन 50% कम कर देंगे लेकिन इतना करने से भी धरती का तापमान 1.5 डिग्री बढ़ने से रोकना मुश्किल है। 50% कम कार्बन-उत्सर्जन आप लोगों के लिए स्वीकार्य हो सकता है लेकिन हम लोगों को यह स्वीकार्य नही है, कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन की अधिकतम सीमा तक पहुँचने में अब हमारे पास साढ़े आठ साल से भी कम का समय बचा है और आप लोग अब तक कोई कारगर योजना बना नही पाए हैं। आप लोग हम लोगों को फेल करने में लगे हुए हैं। हम लोग आपके इस विश्वासघात को समझ रहे हैं। आप लोगों के ऊपर भविष्य की समस्त पीढ़ियों की नजर है। और अगर आप लोग हमें फेल करने का निर्णय ले चुके हैं तो हम लोग आपको कभी माफ नही कर पाएंगे।

ग्रेता की यह पीड़ा पढ़ लेने के बाद शायद वे लोग ग्रेता को समझ पायें जो इसमें षणयंत्र की बू सूंघ रहे हैं। और अगर यह षड्यंत्र भी है तो क्या बुरा है...क्लाइमेट पर बात करने से, समझने से, अनुसरण करने से अकेली ग्रेता को फायदा तो होगा नही...'वसुधैव कुटुम्बकम' यही तो है। ❑

गांधी, भगत सिंह और सावरकर

अफवाहों का बाजार और इतिहास की गवाही

❑ **नितिन ठाकुर**

यह भारतीय राजनीति के दो विपरीत ध्रुवों की उस मुख़्तसर सी मुलाकात पर बात करने का सही मौका है जो लगभग 113 साल पहले हुई थी। मुलाकात की जगह उसी मुल्क की राजधानी थी, जिसके साम्राज्य में कभी सूरज नहीं डूबता था।

एक था 37 साल का वह वकील, जिसे लोग एमके गांधी के नाम से जानते थे। उसने दक्षिण अफ्रीकी भारतीयों के बीच नेतृत्व जमा लिया था। सरकार से बातें मनवाने का वह तरीका भी खोज लिया था, जिसे पूरा भारत महज़ एक दशक बाद अपनाने वाला था।

दूसरा था 23 साल का वह नौजवान, जिसका नाम वीडी सावरकर था। तीन महीने पहले उसने गांधी की ही तरह वकालत के लिए लंदन में दाखिला लिया था। गांधी के शांतिपूर्ण और दिन के उजाले में संपन्न होने वाले अहिंसक आंदोलनों के ठीक उलट, वह गुप्त संगठनों और हथियारों के बल पर दमनकारी सत्ता को उखाड़ फेंकने का सपना देखता था। यही वजह थी कि जहां उसके गुरू का नाम बालगंगाधर तिलक था, वहीं भविष्य में गांधी ने राजनीतिक गुरू के तौर पर गोपालकृष्ण गोखले का शिष्यत्व ग्रहण किया था, जो तिलक के धुर विरोधी थे।

तारीख थी- 20 अक्टूबर 1906. जगह थी लंदन का वह इंडिया हाउस, जो आज खामोशी की चादर ताने चुपचाप खड़ा है मगर बीसवीं सदी के शुरूआती दशक में उसकी छत के नीचे एक से एक क्रांतिकारियों ने पनाह पाई। इंडिया हाउस की दास्तान अपने आप में बेहद रोमांचकारी है, लेकिन आज बात उस छोटी-सी मुलाकात की, जिसे जानकर आप भी समझ लेंगे कि वर्तमान भारत में आमने सामने टकरा रहीं दो विचारधाराओं के प्रेरणापुरुषों की पहली भेंट दरअसल इस संघर्ष की पूर्वपीठिका थी।

गांधी और सावरकर के एनकाउंटर का कोई रिकॉर्ड नहीं मिलता, मगर मुलाकात के चश्मदीद झांसी के पंडित परमानंद ने जो कुछ हरेंद्र श्रीवास्तव को बताया, वही जानकर हमें संतोष करना पड़ता है। उस शाम सावरकर अपने लिए खाना बना रहे थे। गांधी कोई राजनीतिक बात करने में मशगूल थे कि बीच में ही सावरकर ने उन्हें साथ में खाने का न्यौता दिया। सावरकर चितपावन ब्राह्मण थे और अपने लिए झींगा बना रहे थे। गांधी ठहरे शुद्ध शाकाहारी गुजराती। वह न्यौते को लेकर झिझके तो सावरकर ने कहा- अगर आप हमारे साथ खा नहीं सकते, तो हम साथ मिलकर लड़ेंगे कैसे? और फिर ये तो उबली हुई मछली है, जबकि हमें ऐसे लोग चाहिए जो ब्रिटिश को कच्चा चबा जाएं।

दुनिया जानती है कि सावरकर अंग्रेज़ों का कच्चा नहीं चबा सके और न ही उनके अनुयायी इस पचड़े में फंसे। कालांतर में वे दस साल से अधिक की जेल काटने के बाद आज़ाद हुए तो उन्होंने हिंदूवादी राजनीति को आगे बढ़ाया जिसके विरोध का केंद्र अंग्रेज़ नहीं, बल्कि मुसलमान थे। उधर गांधी ने भी अंग्रेज़ों को कच्चा नहीं चबाया लेकिन तीन दशकों तक क्रमशः अपने आंदोलनों से हिलाकर रख दिया।

तीन साल बाद 1 जुलाई 1909 को जब लंदन में मदनलाल ढींगरा ने तत्कालीन भारत-सचिव (जो भारत के वायसराय और लंदन की सरकार के बीच अहम भूमिका निभाता था) के सहयोगी विलियम हट कर्जन वाइली को बेहद करीब से चार गोलियां मारकर ढेर कर दिया तब भी गांधी और सावरकर एक-दूसरे से अलग विचार रखते थे। ढींगरा के परिजनों तक ने उससे संबंध तोड़कर खुद को दूर कर लिया था लेकिन सावरकर ने सार्वजनिक तौर पर उसका साथ दिया, वहीं गांधी ने इसे बहादुरी भरा कारनामा मानने के बजाय, हिंसक कृत्य ठहराया। उन्होंने लिखा कि अगर ऐसी हत्याओं के बाद ब्रिटिश देश छोड़कर चले भी जाएं तो उनकी जगह कौन शासन करनेवाला है? इसका एकमात्र जवाब है- क़ातिल।

गांधी-सावरकर की एक मुलाकात और हुई। संयोग से वह भी अक्टूबर का ही महीना था। साल 1909 था और तारीख 24 अक्टूबर. लंदन में भारतीय समुदाय विजयादशमी मनाने के लिए इकट्ठा हुआ था। गांधी ने उस दिन राजनीति पर बोलने से परहेज किया और रामायण पर बोले। उन्होंने देश की आज़ादी से पहले चल रहे संघर्ष को रामायण के पात्रों से जोड़ते हुए कहा था कि शासन करने से पहले भगवान राम ने वनवास भोगा था। तब सीता को भी असंख्य परेशानियां झेलनी पड़ी थीं और लक्ष्मण किसी अविवाहित की तरह जिये थे।

उनके बाद सावरकर को बोलने का मौका मिला और उन्होंने देवी दुर्गा के बहाने युद्ध का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि राम अगर रावण के खिलाफ अनशन पर बैठते तो रामराज्य की स्थापना असंभव थी।

निश्चित ही सावरकर, युग और परिस्थिति भुलाकर हिंसक उपायों के पक्ष में तर्क गढ़ रहे थे, जबकि अचरज है कि गांधी दुनिया के दरवाज़े पर दस्तक देते लोकतंत्र को पहचानकर ऐसा रास्ता दिखा रहे थे, जिसमें मनुष्य का खून कम से कम बहे। बीसवीं सदी ने साबित भी किया कि सत्ता से टकराने का एकमात्र रास्ता बंदूक और बम नहीं, बल्कि सत्याग्रह और उपवास भी है।

सावरकर और गांधी की दिलचस्प मुलाकातों के बाद उसी सिलसिले को आगे बढ़ाते हुए गांधी पर भगत सिंह की फांसी न रोकने के आरोपों की पड़ताल करते हुए लिख रहा हूं। आप हैरान होंगे कि भगत सिंह तो छोड़िये, किस तरह गांधी ने उन सावरकर तक को जेल से छुड़ाने का प्रयास किया, जिनके पांव छूने के बाद गोडसे ने गांधी को गोली मारी।

क्या ही विडंबना है कि गांधी के तरीकों

का विरोध करने वाले सावरकर ने सेलुलर जेल से मुक्ति पाने के लिए जो माफीनामे लिखे, उनमें संविधानवाद, अहिंसा और सुधार के समर्थन की घोषणा की। हालांकि जेल से रिहाई के कुछ साल बाद 'मेरा आजीवन कारावस' नाम की किताब में वे ठीक इसके उलट लिख रहे थे। यही वजह है कि कई लोग मानते हैं कि सावरकर ने मौके देखकर रंग बदले, जबकि दूसरों का कहना है कि इसे युद्ध की एक रणनीति जैसा माना जाए। आप दोनों में से कुछ भी मान सकते हैं, लेकिन इसके ठीक विपरीत गांधी का पूरा जीवन कथनी-करनी एक करने में ही बीता। अब यह आप पर है कि किस जीवन शैली के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हैं।

गांधी पर भगत सिंह की फांसी न रुकवाने के आरोप लगते हैं। हालांकि विभिन्न साक्ष्यों से प्रमाणित हो चुका है कि भगत खुद अपनी फांसी नहीं रुकवाना चाहते थे (एक बार ऐसा प्रयास करने वाले अपने पिता तक को उन्होंने सख्त खत लिखा था), और दूसरी तरफ गांधी ने तत्कालीन वायसराय को खत लिखकर भी इस सजा को रोक देने की अपील की थी। जेल में नेहरू भी भगत से मिलने गए थे। यहां तक कि भगत सिंह के हिंसक तरीकों के बावजूद गांधी का लेखन अब उतना सख्त नहीं था, जितना ढींगरा के समय था। फिर भी भगत सिंह की लोकप्रियता ने गांधी के निष्फल प्रयासों को धो डाला। भगत की फांसी के बाद कई कांग्रेसियों तक ने दुखी होकर आरोप लगा दिए कि गांधी अपने प्रभाव का समुचित उपयोग नहीं कर सके। बाद में गांधी ने इस विषय पर कई बार लिखा लेकिन गांधी के आलोचकों ने उसे सुविधापूर्वक नज़रअंदाज़ करके उन पर सालों साल बस आरोप लगाए।

गांधी पर भगत सिंह की फांसी न रुकवाने के आरोप लगते हैं। हालांकि विभिन्न साक्ष्यों से प्रमाणित हो चुका है कि भगत खुद अपनी फांसी नहीं रुकवाना चाहते थे (एक बार ऐसा प्रयास करने वाले अपने पिता तक को उन्होंने सख्त खत लिखा था), और दूसरी तरफ गांधी ने तत्कालीन वायसराय को खत लिखकर भी इस सजा को रोक देने की अपील की थी। जेल में नेहरू भी भगत से मिलने गए थे।

यहां मैं गांधी और विनोबा दर्शन को समझने वाले अव्यक्त जी की लिखी कुछ पंक्तियों के सहारे बात बढ़ाने का प्रयास करूंगा।

26 मार्च 1931 को कराची में प्रेस के प्रतिनिधियों को संबोधित करते हुए गांधी जी ने कहा - 'मैं भगत सिंह और उनके साथियों की मौत की सजा में बदलाव नहीं करा सका और इसी कारण नौजवानों ने मेरे प्रति अपने क्रोध का प्रदर्शन किया है (दो दिन पहले उन्हें विरोधस्वरूप फूल भेंट किए गए थे)। ये युवक चाहते तो इन फूलों को मेरे ऊपर बरसा भी सकते थे या मुझ पर फेंक भी सकते थे, पर उन्होंने यह सब न करके मुझे अपने हाथों से फूल लेने की छूट दी और मैंने कृतज्ञतापूर्वक इन फूलों को लिया। बेशक, उन्होंने 'गांधीवाद का नाश हो' और 'गांधी वापस जाओ' के नारे लगाए और इसे मैं उनके क्रोध का सही प्रदर्शन मानता हूं।'

लेकिन इसी प्रेस कॉन्फ्रेंस में उन्होंने आगे कहा था- 'आत्म-दमन और कायरता से भरे दब्बूपने वाले इस देश में हमें इतना अधिक साहस और बलिदान नहीं मिल सकता। भगत सिंह के साहस और बलिदान के सामने मस्तक नत हो जाता है, लेकिन यदि मैं अपने नौजवान भाइयों को नाराज किए बिना कह सकूं तो मुझे इससे भी बड़े साहस को देखने की इच्छा है। मैं एक ऐसा नम्र, सभ्य और अहिंसक साहस चाहता हूं जो किसी को चोट पहुंचाए बिना या मन में किसी को चोट पहुंचाने का तनिक भी विचार रखे बिना फांसी पर झूल जाए।'

26 मार्च, 1931 को कराची अधिवेशन में भगत सिंह के संदर्भ में ही बोलते हुए उन्होंने कहा था- 'आपको जानना चाहिए कि खूनी को, चोर को, डाकू को भी सजा देना मेरे धर्म के विरुद्ध है। इसलिए इस शक की तो कोई वजह ही नहीं हो सकती कि मैं भगत सिंह को बचाना नहीं चाहता था।' इस सभा में नौजवान भारत सभा के सदस्य भी बड़ी संख्या में मौजूद थे। दीवान चमनलाल जो नौजवान भारत सभा के सचिव थे, वे तो गांधी के अन्यतम सहयोगियों में से ही थे और वहां भी उनके साथ ही थे। इतने संवेदनशील और भावुक माहौल में भी गांधी पूरे होश में और पूरी करुणा से अपनी बात रख रहे थे।

तभी किसी ने चिल्लाकर पूछा- 'आपने भगत सिंह को बचाने के लिए किया क्या?'

इस पर गांधी ने जवाब दिया- 'मैं यहां अपना बचाव करने के लिए नहीं बैठा था, इसलिए मैंने आपको विस्तार से यह नहीं बताया कि भगत सिंह और उनके साथियों को बचाने के लिए मैंने क्या-क्या किया। मैं वाइसराय को जिस तरह समझा सकता था, उस तरह से मैंने समझाया. समझाने की जितनी शक्ति मुझमें थी, सब मैंने उन पर आजमा देखी। भगत सिंह की परिवारवालों के साथ निश्चित आखिरी मुलाकात के दिन यानी 23 मार्च को सवेरे मैंने वाइसराय को एक खानगी (अनौपचारिक) खत लिखा. उसमें मैंने अपनी सारी आत्मा उड़ेल दी थी। पर सब बेकार हुआ।'

इससे करीब दो महीने पहले 31 जनवरी, 1931 को भी इलाहाबाद में गांधी कह चुके थे- 'जिन कैदियों को फांसी की सजा मिली है, उन कैदियों को फांसी नहीं होनी चाहिए पर यह तो मेरी निजी राय है. इसे समझौते की शर्त बना सकते हैं या नहीं, यह नहीं कहा जा सकता।'

भगत सिंह को फांसी होने के एक महीने पहले जब गांधी वाइसराय से मिलने गए थे, तब भी उन्होंने भगत सिंह की सजा मुल्तवी करने की मांग की थी। बिड़ला द्वारा इस मुलाकात के बारे में पूछे जाने पर 18 फरवरी, 1931 को गांधी ने कहा था- 'मैंने उनसे भगत सिंह की बात की. ...मैंने भगत सिंह के बारे में कहा, वह बहादुर तो है ही, पर उसका दिमाग ठिकाने नहीं है, इतना जरूर कहूंगा। फिर भी मृत्युदंड बुरी चीज है, क्योंकि वह ऐसे व्यक्ति को सुधरने का अवसर नहीं देती। मैं तो मानवीय दृष्टिकोण से यह बात आपके सामने रख रहा हूं और देश में नाहक तूफान न उठ खड़ा हो, इसलिए सजा मुल्तवी कर देने का इच्छुक हूं.।मैं तो उसे छोड़ दूं, लेकिन कोई सरकार उसे छोड़ देगी, ऐसी आशा मुझे नहीं है।'

अव्यक्त अपने लेख में जोड़ते हैं कि दरअसल भगत सिंह के बारे में ब्रिटिश हुकूमत

शुरू से ही गलतफहमियों का शिकार थी। क्रांतिकारियों के तौर-तरीकों के बारे में यह गलतफहमी उस दौरान भारतीयों के एक बड़े वर्ग में भी मौजूद थी। ऊपर-ऊपर से हिंसक दिखने वाले तौर-तरीकों की वजह से ब्रिटिश हुकूमत इन इन्कलाबियों के प्रति बेहद सख्त रवैया अपनाए हुई थी। गांधी समेत अन्य कई नेता इन युवाओं के जोश से प्रभावित अवश्य थे, लेकिन इनके तौर-तरीकों की वजह से वे इनसे परहेज भी करते थे, इसलिए जेल में भगत सिंह अपने और साथियों के साथ दुर्व्यवहार के विरुद्ध जब अनशन पर बैठ गए और जवाहरलाल नेहरू ने उनकी पैरवी की थी, तो गांधी ने नेहरू को चिट्ठी लिखकर इसे एक 'असंगत' कार्य बताया था।

भगत सिंह और उनके साथियों के प्रति ब्रिटिश हुकूमत भयभीत हो चुकी थी और इसलिए सरकारी गुप्तचर उन सभी के पीछे पड़े हुए थे, जिनके बारे में उन्हें थोड़ा सा भी लगता था कि इन्हें भगत सिंह से सहानुभूति हो सकती है। इनमें नेहरू, पटेल और मालवीय से लेकर तेजबहादुर सप्रू तक थे। माना जाता है कि भगत सिंह की फांसी के बाद ब्रिटिश इंटेलिजेंस को यह देखने तक के लिए लगाया गया था कि इस पर गांधी, नेहरू और पटेल इत्यादि की व्यक्तिगत प्रतिक्रिया क्या थी।

लेकिन अंतिम अवस्था तक आते-आते गांधी को भगत सिंह के प्रति बहुत अधिक सहानुभूति हो चली थी, जब भगत सिंह को तय समय से एक दिन पहले ही फांसी दिए जाने की खबर मिली तो गांधी काफी देर के लिए मौन में चले गए थे। 23 मार्च, 1931 को भगत सिंह की फांसी के संबंध में दिए गए अपने वक्तव्य में गांधी ने कहा था- 'भगत सिंह और उनके साथी फांसी पाकर शहीद हो गए हैं। ऐसा लगता है, मानो उनकी मृत्यु से हजारों लोगों की निजी हानि हुई है। इन नवयुवक देशभक्तों की याद में प्रशंसा के जो शब्द कहे जा सकते हैं, मैं उनके साथ हूं। ...मेरा निश्चित मत है कि सरकार द्वारा की गई इस गंभीर भूल के परिणामस्वरूप स्वतंत्रता प्राप्त करने की हमारी शक्ति में वृद्धि हुई है और उसके लिए भगत सिंह और उनके साथियों ने मृत्यु का वरण किया है।'

भगत सिंह को श्रद्धांजलि देते हुए गांधी ने 29 मार्च, 1931 को गुजराती नवजीवन में लिखा था- 'वीर भगत सिंह और उनके दो साथी फांसी पर चढ़ गए। उनकी देह को बचाने के बहुतेरे प्रयत्न किए गए, कुछ आशा भी बंधी, पर वह व्यर्थ हुई। भगत सिंह को जीवित रहने की इच्छा नहीं थी; उन्होंने माफी मांगने से इनकार किया। यदि वे जीते रहने को तैयार होते, तो या तो वह दूसरों के लिए काम करने की दृष्टि से होता या फिर इसलिए होता कि उनकी फांसी से कोई आवेश में आकर व्यर्थ ही किसी का खून न करे। भगत सिंह अहिंसा के पुजारी नहीं थे, लेकिन वे हिंसा को भी धर्म नहीं मानते थे। वे अन्य उपाय न देखकर खून करने को तैयार हुए थे। उनका आखिरी पत्र इस प्रकार था—'मैं तो लड़ते हुए गिरफ्तार हुआ हूं। मुझे फांसी नहीं दी जा सकती। मुझे तोप से उड़ा दो, गोली मारो।' इन वीरों ने मौत के भय को जीता था। इनकी वीरता के लिए इन्हें हजारों नमन हों।'

इस बीच जोड़ दूं कि भारत के वर्तमान प्रधान मंत्री ने आरोप लगाया था कि कोई कांग्रेस नेता भगत से मिलने जेल में नहीं गया था और उधर 8 अगस्त 1929 को नेहरू की भगत-बटुकेश्वर दत्त से मुलाकात की रिपोर्ट्स आज भी कई अखबारों के आर्काइव में सुरक्षित हैं। मालूम नहीं कि ये वर्तमान प्रधानमंत्री का बेहद सीमित ज्ञान था या फिर चुनावी हथकंडा कि उन्होंने ऐसा कहा। इसी लाइन पर आजकल बहुत से लोग अंधे होकर चल रहे हैं। उल्लेखनीय है कि भगत सिंह की ज़ोरदार पैरवी मोहम्मद अली जिन्ना तक ने की थी, जिसका जिक्र 'जिन्ना-एक पुनर्दृष्टि' में विस्तार से हुआ है। दूसरी ओर गांधी पर आरोपों की बौछार के आलोक में ही सावरकर के अनुयायियों से पूछना बनता है कि भगत सिंह को फांसी से बचाने के लिए सावरकर के प्रयासों को वे सामने क्यों नहीं लाते? कम से कम हिंदू महासभा का ही कोई आंदोलन बताया जाए। इसके अतिरिक्त तब तक स्थापित हो चुके उसके पितृसंगठन राष्ट्रीय स्वयंसेव संघ के प्रयासों पर भी रोशनी डाली जाए, जो उन्होंने भगत को बचाने के लिए किए हों।

उल्लेखनीय है कि तीनों सावरकर भाइयों में से सबसे छोटे डॉ नारायणराव सावरकर ने गांधी जी से अपने भाइयों को रिहा कराने की दरख्वास्त की थी। नारायणराव ने गांधी को छह खत लिखे। ऐसा नहीं कि नारायणराव को न पता हो कि उनके दोनों बड़े भाई गांधी के रास्ते से इत्तफाक नहीं रखते लेकिन फिर भी वे 18 जनवरी 1920 में बापू से भाइयों की मुक्ति के लिए सलाह मांग रहे थे।

गांधी ने लाख मतभेदों के बावजूद डॉ सावरकर को निराश नहीं किया। पूरे मामले को जनता के ध्यान में लाने का आश्वासन दिया। इसके बाद 26 मई 1920 को गांधी ने यंग इंडिया में 'सावरकर बंधु' नाम से लेख लिखा। बाबाराव सावरकर के घर-परिवार का हवाला देकर गांधी ने लिखा कि उन्होंने कोई हिंसा नहीं की है। विनायक सावरकर के लिए भी उन्होंने लिखा कि लंदन में उनका शानदार करियर रहा है और उन पर हिंसक गतिविधि का कोई

गांधी पर आरोपों की बौछार के आलोक में ही सावरकर के अनुयायियों से पूछना बनता है कि भगत सिंह को फांसी से बचाने के लिए सावरकर के प्रयासों को वे सामने क्यों नहीं लाते? कम से कम हिंदू महासभा का ही कोई आंदोलन बताया जाए। इसके अतिरिक्त तब तक स्थापित हो चुके उसके पितृसंगठन राष्ट्रीय स्वयंसेव संघ के प्रयासों पर भी रोशनी डाली जाए, जो उन्होंने भगत को बचाने के लिए किए हों।

आरोप साबित नहीं होता है। गांधी अपने लेख में सावरकर भाइयों की याचिका को ही आधार बनाकर ब्रिटिश सरकार से उन पर भरोसा करने के लिए कह रहे थे लेकिन भगत सिंह के मामले की तरह ही सरकार गांधी जी को अनसुना करती रही। यहां तक कि गांधी के प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए लेजिस्लेटिव असेंबली में विट्ठलभाई पटेल सावरकर बंधुओं की माफी का प्रस्ताव भी पेश करते हैं। इसके बाद भी परिस्थितियों ने कुछ इस तरह करवट ली कि सावरकर बंधुओं को एक ही साल के भीतर सेलुलर जेल से भारत की मुख्य भूमि की जेलों में स्थानांतरित कर दिया गया। अंततः 1924 की जनवरी में करीब डेढ़ दशक के जेल जीवन से सावरकर को आजाद कर दिया गया। ❑

जीवन-आरोहण का गांधी-दर्शन

महात्मा गांधी की जीवन-यात्रा स्थूल से सूक्ष्म की यात्रा है। भौतिकता से आध्यात्मिकता की यात्रा है। स्व से निःस्व की और वाह्य से अंतर की यात्रा है। अपने प्रयोगधर्मी जीवन की साधना-यात्रा में उन्होंने जन-मन में व्याप्त सामान्य शब्दों को भी विशिष्ट अर्थ दिये। गांधी ने केवल विचार नहीं दिये, जीवन के मूल्य तय किये। यह जीवन यात्रा एक जीवन द्रष्टा के आरोहण की यात्रा रही है। विभिन्न स्त्रोतों से संकलित यह सामग्री उस जीवन-द्रष्टा के अध्यात्म-जीवन का हासिल भी है और दर्शन भी। यही गांधी-दर्शन भी कहलाता है। –सं.

मनोदर्शन

श्रद्धा बुद्धि से परे, पर उसकी विरोधी नहीं

महात्मा गांधी ने श्रद्धा और बुद्धि में एकाएक प्रतीत होने वाले विरोध को स्वीकार किया है। उन्होंने अपना दृष्टिकोण प्रकट करते हुए कहा कि इन दोनों में कोई विरोध नहीं है। इनमें विरोध का कारण है, बुद्धि द्वारा श्रद्धा पर अधिकार जताने की प्रवृत्ति। बुद्धि श्रद्धा को अपने अधिकार क्षेत्र से परे समझे। श्रद्धा तक बुद्धि की पहुंच है ही नहीं। बुद्धि ऐसा मान ले तो विरोध उत्पन्न ही नहीं हो। गांधीजी ने अपने जीवन में श्रद्धा को सर्वाधिक महत्त्व दिया है। उन्होंने स्वयं को दरिद्रनारायण का सेवक बतलाया है। दरिद्रों और रोगियों, यहां तक कोढ़ियों की सेवा श्रद्धासम्पन्न व्यक्ति ही कर सकता है। प्रदर्शन के युग में सब प्रकार के आत्मप्रचार से दूर रहकर अर्द्धनग्न शरीर में सम्राटों तक से मिलने का साहस श्रद्धा के बल से ही किया जा सकता है।

कर्म

उन्नति का मूल है साधक का आत्मसमर्पण

गांधीजी का मानना था कि ओछे साधन अपनाकर किसी महान परिणाम की प्राप्ति नहीं की जा सकती है। उत्तम परिणाम पाने के लिए साधन भी उत्तम होने चाहिए। वे साध्य के साथ साधन की शुद्धता पर केवल उपदेश मात्र देकर रह जाते तो उसका वह महत्त्व नहीं होता। उन्होंने अपने कथन को करके भी दिखाया।

ऐसा करना तभी संभव होता है, जब प्रयोगकर्ता के समक्ष साध्य और साधन की स्पष्ट रूपरेखा हो। उनमें लोकजीवन के साथ सीधा संपर्क होने से उस विवेक का जन्म हो गया था, जिसके तहत उन्होंने जीवन को उन्नति का पर्याय माना। गांधीजी के अनुसार उन्नति आत्मज्ञान है। जीवन का उद्देश्य भी यही है।

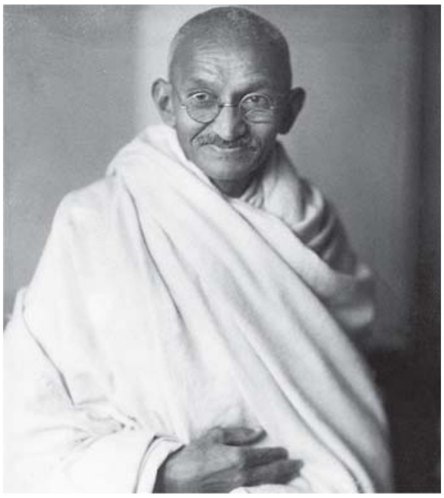

कार्य भी पूरा हो, उससे मानसिक संतोष भी हो। यह तभी हो सकता है, जब कार्य करते समय करने वाले की भावना शुद्ध हो। प्राणिमात्र के सारे कार्य विश्वात्मा के प्रति समर्पित आत्मा की आहुतियां हैं। यह समर्पण की भावना यज्ञ की आधारशिला है।

मैत्री

सच्चे मित्र से बढ़कर संसार में कोई दर्पण नहीं

गांधीजी ने मित्रता का एक सूत्र बताया है और वह सूत्र, न्याय नहीं बल्कि त्याग है। यह त्याग ही मित्रता का नियम है। यहां न्याय से तात्पर्य उन कसौटियों से है, जिन्हें मनुष्य व्यक्तिगत रुचि से या जीवन की विषम परिस्थितियों में स्वीकार करता है। इन कसौटियों में न्याय के लिए अपेक्षित विवेक का अभाव होता है। यदि ये कसौटियां कभी वास्तविक न्याय बुद्धि से मिल जायें, तो भी मित्रता ऐसी कसौटियों पर कसने योग्य नहीं होती। मित्रता का संबंध साधारण सामाजिक संबंधों से निराला होता है। जहां रक्त संबंध भी असफल हो जाते हैं, वहां मित्रता सफलतापूर्वक पनप सकती है। यह संबंध बड़े कोमल सूत्रों से बंधा होता है। स्वार्थों की आरी कितनी ही छोटी और कोमल हो, मित्रता के सूत्रों को काटने के लिए पर्याप्त होती है। त्याग स्वार्थ की दहनभूमि है। इसमें मित्रता का बीजारोपण अत्यंत शीघ्र होता है। गांधीजी को जीवन का व्यापक अनुभव था। इसलिए उन्होंने सच्ची मित्रता के लिए ऐसे स्वर्णसूत्र का ईजाद किया। उनका अपना जीवन त्यागमय था। इसलिए उनके राजनीतिक जीवन के बड़े से बड़े दुश्मन, प्रतिद्वंद्वी भी व्यवहार में उनके मित्र बन गये थे।

अंतर्दर्शन

प्रार्थना याचना करना नहीं है, वह तो आत्मा की पुकार है

बापू का कहना था कि रोटी न मिले तो मैं व्याकुल नहीं होता, पर प्रार्थना के बिना तो पागल हो जाऊं। मेरा सारा जीवन प्रार्थनामय ही है और इसका सुख इस मार्ग पर जाने से ही मिल सकता है। प्रार्थना को अपने जीवन का आधार मानकर चलने वाले गांधीजी अंतिम समय में प्रार्थना की मुद्रा में थे और उनके आखिरी शब्द थे—हे राम। उनका कहना था कि प्रार्थना का उद्देश्य आत्मसाक्षात्कार है। यह काम नास्तिक भी कर सकता है। नास्तिक सबको नकार सकता है, लेकिन खुद को कैसे नकारेगा। स्वयं के अस्तित्व को स्वीकार कर लेने पर अपनी 'आत्मा' की खोज की ओर प्रवृत्ति होना स्वाभाविक है। 'आत्मा' की खोज तभी पूरी हो सकती है, जब हृदय शीशे की तरह स्वच्छ हो।

शिक्षा

हर भूल कुछ शिक्षा देती है

महात्मा गांधी की मान्यता थी कि मनुष्य शिक्षा लेता है। उसे शिक्षा दी नहीं जाती। यदि कोई यह माने कि वह किसी को शिक्षा दे रहा है तो यह उसका अहंकार ही है।

उन्होंने देश की आर्थिक दशा को देखते हुए बुनियादी शिक्षा पद्धति पर बल दिया था। गांधीजी के शिक्षा-दर्शन के तीन भाग हैं। पहला, मनुष्य सीखने की इच्छा जगाये, दूसरे, वह कर्म करता हुआ सीखे और तीसरा, कर्म करते समय होने वाली भूलों से भी सीखे। तीन बंदरों के जरिये भी वे प्रचलित मान्यताओं से अलग कुछ और कहना चाहते थे। मुंह से कहने की अपेक्षा हाथों से करें। आंख बंद का संकेत था, सोच-समझकर काम करें। कान बंद करने का अर्थ था, अपने विवेक के सिवा किसी की न सुनें।

स्वराज्य

काम अपने ढंग से करने का हक

गांधीजी ने कहा था कि जैसे मुझे खाने पीने का हक है, उसी तरह मुझे अपना काम अपने ढंग से करने का हक है। यही स्वराज्य है। उन्होंने अपने इस कथन में अपना उद्देश्य चुनने और उसके लिए साधन जुटाने की स्वतंत्रता को स्वराज्य कहा है। गांधीजी ने स्वराज्य शब्द का प्रयोग अपना या अपनों का राज्य के अर्थ में भी किया है। उनका कहना था कि 'स्वराज्य' रामराज्य होगा, जिसमें सब आजाद होंगे। इसमें साधन चुनने की आजादी की ओर संकेत है। उनका कहना था कि हम अपने ऊपर राज्य करें, यही स्वराज्य है और स्वराज्य हमारी हथेली में है। यानी लगातार कर्म करना स्वराज्य का मूलमंत्र है।

अहिंसा और सत्य

ये सीमा रहित हैं और कभी निष्फल नहीं होते

महात्मा गांधी की मान्यता के दो ध्रुव बिन्दु है, अहिंसा और सत्य। सत्य का प्रयोगात्मक रूप ही उनके अनुसार, अहिंसा है और अहिंसा का अविचल रूप ही सत्य है। वह सत्य को साध्य मानते थे, अहिंसा को साधन। उन्होंने लिखा है, साधन अपने हाथ की बात है। इससे अहिंसा परम धर्म मानी गयी। सत्य परमेश्वर हुआ। अहिंसा का मार्ग जितना सीधा है, उतना ही तंग भी है, तलवार की धार पर चलने के समान है। उनका कहना था कि मनुष्य के पास अहिंसा सबसे बड़ा बल है। इंसान की सारी योग्यता और बुद्धि द्वारा बनाये गये विनाश और मौत के सारे ताकतवर हथियारों से भी यह ज्यादा शक्तिशाली है। अहिंसा और कायरता परस्पर विरोधी शब्द हैं। अहिंसा का मूल प्रेम में और कायरता का मूल घृणा में है।

आरोग्य

तीर्थ जैसी पवित्र है देह, इसे निरोग रखना अनिवार्य

गांधीजी मध्यकालीन संतों की तरह शरीर को अपवित्र नहीं मानते थे। उनका कहना था कि देह पवित्र है तो देह धारण के लिए साधनों का भी पवित्र होना जरूरी है। इसे तीन तरह से बनाये रखा जा सकता है। एक- मनुष्य सदा शुद्धता का ध्यान रखे, दो-शुद्ध और आरोग्यवर्धक पदार्थों का सेवन किया जाये और देह को सदैव पवित्र कार्यों में लगाया जाये, तीसरा- शरीर के स्वास्थ्य का संबंध मन की स्थिति से होता है। वह शरीर को निरोग रखने के लिए विचारों की शुद्धि को अनिवार्य मानते थे। वह मानते थे कि जिस मनुष्य के जैसे विचार होते हैं, वह वैसा ही होता है। यदि विचार स्वच्छ न हों तो यह जीवन की बहुत बड़ी क्षति है। गांधीजी स्वयं शाकाहारी थे और प्रकृति के हिसाब से जीवनयापन करते थे। वह चाहते थे कि रोगी होकर डॉक्टर की शरण में जाने की अपेक्षा रोग हो ही नहीं, ऐसी कोशिश की जानी चाहिए। साथ ही वह ब्रह्मचर्य को दीर्घायु होने का सर्वोत्तम और एकमात्र उपाय मानते थे। उनका कहना था कि ब्रह्मचर्य का अर्थ केवल शारीरिक संयम ही नहीं है अपितु इसका अर्थ है, सभी इंद्रियों पर पूर्ण अधिकार तथा मन, वचन व शरीर से काम-भाव से मुक्ति।

अर्थ

पूंजी पर हक लोकसेवक का, जनता है सच्चा बैंक

आधुनिक काल में अर्थ के संबंध में दो दृष्टिकोण प्रचलित हैं, एक जन्माधिकारवाद और दूसरा श्रमाधिकारवाद। पूंजीवादी देश पूंजी पर जन्म से अधिकार मानने पर बल देते हैं, जबकि साम्यवादी देश पूंजी पर श्रम करने वाले का हक मानते हैं। गांधीजी पूंजी पर सेवक का या लोकसेवक का अधिकार मानते हैं। सेवक का अर्थ जनहित के लिए कार्य करने वाला। ऐसा व्यक्ति पूंजीपति भी हो सकता है और श्रमिक भी। पूंजी का समाज हित के लिए ही उपयोग होना चाहिए। वह कहते थे कि ईश्वर द्वारा निर्मित हवा, पानी की तरह सब चीजों पर सबका समान अधिकार होना चाहिए। धन की सुरक्षा के लिए बैंक हैं और बैंक मनुष्य ने बनाये हैं। गांधीजी एक ऐसे बैंक का जिक्र करते हैं जो ईश्वर निर्मित है और यह बैंक जनता है। उनके अनुसार, व्यक्ति समाज की अर्थ शक्ति की रक्षा करने वाला समाज द्वारा नियुक्त ट्रस्टी है। उसका काम धन की तब तक रक्षा करते रहना है, जब तक समाज को उसकी आवश्यकता न हो। यदि कोई समाज सेवक समाज के हितकारी काम के लिए धन की जरूरत महसूस करे तो प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह धनिक हो या साधारण श्रमिक, उसे अपना धन समर्पित कर देना चाहिए।

राजनीति

सत्ता प्राप्ति न होकर, मानव सेवा की भावना है

गांधीजी ने राजनीति का आधार धर्म को स्वीकार किया था। उन्होंने मानवीय धर्म के अंगों में सत्य, अहिंसा और निर्भयता को प्राथमिकता दी। राजनीति में भी उन्होंने इसे शामिल किया। वह राजनीति का उद्देश्य स्वराज्य की स्थापना मानते थे। वह कूटनीति को राजनीति का अंग मानने से सहमत नहीं थे। साथ ही वह इससे भी सहमत नहीं थे कि राजनीति में सच्चाई का कोई स्थान नहीं है। उनका मत था कि लड़ाई तो अकेले ही लड़ी जानी चाहिए और आत्मबल के बिना कोई भी व्यक्ति अकेले लड़ाई नहीं लड़ सकता। सशक्त और स्वावलंबी बनना उनकी राजनीति के प्रमुख लक्ष्य थे। उनकी मान्यता थी कि इन दोनों के दम पर ही स्वाधीनता हासिल की जा सकती है। अशक्त की उचित प्रार्थना भी अनसुनी रह जाती है। निर्बल का कोई सहायक नहीं होता है। अपने देशवासियों पर विश्वास करके और स्वयं सशक्त बनकर अपने देश को सबल व समर्थ बनाने का दृढ़संकल्प लेने से ही देश की स्वाधीनता की रक्षा संभव है। उनकी राजनीति का मूलभूत विचार सत्ता प्राप्ति न होकर, मानव सेवा की भावना है। ❑

गतिविधियां एवं समाचार

विमुवा का एक दिवसीय जन-जल सत्याग्रह

विस्थापित मुक्ति वाहिनी ने पूर्व घोषित जन-जल सत्याग्रह का आयोजन 2 अक्टूबर को चाण्डिल बांध के नौका विहार स्थल पर किया, जिसमें विभिन्न गांवों के विस्थापित शामिल हुए। ज्ञात हो कि चाण्डिल बांध के अधीक्षण अभियंता कार्यालय के सामने 12 सूत्री मांग पत्र के पक्ष में धरना दिया गया था और उसी दिन विमुवा की ओर से यह घोषणा की गई थी कि अगर सितम्बर 2019 तक स्थानीय समस्या का निराकरण एंव नीतिगत बिंदुओं पर ठोस पहल नहीं की जाती है तो महात्मा गांधी की 150वीं जंयती व विश्व अहिंसा दिवस के अवसर पर जन-जल सत्याग्रह किया जायेगा। यह सत्याग्रह इसी पृष्ठभूमि में संपन्न हुआ, पुनर्वास स्थलों का सीमांकन, विस्थापितों को पुनर्वास स्थलों पर आंवटित आवासीय भूखंडो का कानूनी मालिकाना, 2003 एवं 2012 की पुनर्वास नीति का पूर्ण अनुपालन, कतज्ञता पैकेज एंव चाण्डिल जलाशय के पानी एंव जलकर पर विस्थापितों का हिस्सा सुनिश्चित करने पर विशेष जोर दिया गया। विमुवा ने कहा है कि अगर हमारी मांगों को माना नहीं गया तो नव वर्ष 2020 में अनिश्चितकालीन सत्याग्रह प्रारंभ किया जायेगा। सत्याग्रह स्थल पर पुनर्वास पदाधिकारी बिपिन भगत एंव चाण्डिल बांध के सहायक अभिंयता राजीव गाडी ने आकर विमुवा कार्यकर्ताओं को आश्वस्त किया कि जल्द ही सभी पुनर्वास स्थलों के सीमांकन की प्रक्रिया प्रारंभ की जायेगी। उन्होने यह भी कहा कि कानूनी मालिकाना देने के लिए उच्चस्तरीय पहल की आवश्यकता है। विमुवा प्रतिनिधि मंडल ने शीघ्र ही अपने मांगपत्र के साथ प्रशासन से मिलना तय किया है। कार्यक्रम में उपस्थित कपूर बागी, बासदेव आदित्यदेव, देबेन महतो, कार्तिक महतो, सिलू सारना, किरण वीर, सुदामा हेम्ब्रम, नारायण गोप, श्यामल मार्डी,अरविंद अंजुम, जगदीश सरदार, गोविंद सरदार, सनातन मार्डी, सुकेन्दर हेम्ब्रम, छोटू हेम्ब्रम तथा प्यारेलाल मांझी के अलावा सैकड़ों लोग शामिल थे।

कोशी नव-निर्माण मंच ने मनायी महात्मा गांधी की 150वीं जयंती

कोशी नव निर्माण मंच द्वारा राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की 150 वीं जयंती के अवसर पर 'वर्तमान समय में महात्मा गाँधी' विषय पर मधेपुरा में परिचर्चा का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत महात्मा गाँधी व शास्त्री जी के चित्र पर माल्यार्पण के साथ हुई। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए सर्व सेवा संघ के मंत्री रमेश पंकज ने कहा कि वर्तमान समय के चुनौतीपूर्ण समय में जहां आर्थिक संकट, कृषि संकट, पर्यावरण का संकट, गैर बराबरी, नफरत, हिंसा या यूं कहें कि सभ्यता का संकट गहराता जा रहा है, ऐसे चुनौतीपूर्ण समय में गाँधीवाद ही एकमात्र विकल्प है। आज के दिन अहिंसा दिवस के रूप में मनाकर संयुक्त राष्ट्र संघ गाँधीवाद अपना रहा है, पर अपने देश में हम गाँधी को भूलने लगे हैं। संस्थागत और राजनीतिक रूप से गाँधी को नफरत की खेती करने वाले भी याद कर रहे हैं। उनको गाँधी जी से प्रेरणा लेकर नफरत, हिंसा व दमन के रास्ते को छोड़ देना चाहिए। देशवासियों को नए दौर में आपसी भाईचारे, समता, मानवीयता पर आधारित समाज के बुनियादी मूल्यों के लिए गाँधी का मार्ग अपनाना होगा।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए प्रो. अखिलेश वर्मा ने गाँधी जी के जीवन व विचारों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि गांधी जी सत्ता का विकेंद्रीकरण चाहते थे। वे गांवों के विकास को आधार मानते थे। कोशी नव निर्माण मंच के अध्यक्ष संदीप यादव ने गाँधीजी को याद करते हुए कहा कि मंच कोशी क्षेत्र के 150 गांवों में बापू के विचारों को लेकर जाएगा। नफरत, गैर बराबरी के खात्मे और सत्य, अहिंसा व मानवीय मूल्यों की स्थापना के लिए किसानों, मजदूरों व नौजवानों को गोलबंद करेगा।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए प्रो0 नरेन्द्र राय, घनश्याम, अभिषेक, सुनील कुमार वर्मा, शिवनंदन मुखिया, देवकी देवी, सीता देवी, चन्द्र किशोर, मंटू यादव, विजय यादव, अरविंद, सोनू कुमार, रमन जी, मनोज, अनिल मेहता, शिशुपाल, संजय, सतीश, शम्भू, अजय, रणबीर, यशपाल, धीरज झा, निकी स्वेता, मीनाक्षी, नरेश, प्रमोद मेहता, दिलीप यादव, सुनील वर्मा, रौशन, माधव तथा महेन्द्र यादव ने अपनी बातें रखी। कार्यक्रम का संचालन राजू खान ने किया।

मौजूदा समय मे गांधी विचार ज्यादा प्रासंगिक

जिला सर्वोदय मंडल सीतामढ़ी के तत्वावधान में खादी भण्डार प्रांगण में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी तथा पूर्व प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री के चित्र पर माल्यार्पण के साथ दोनों महापुरुषों के आजादी के संघर्ष तथा राष्ट्रनिर्माण में योगदान पर चर्चा की गई। इस मौके पर जिला सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष डॉ. आनन्द किशोर की अध्यक्षता में 'मौजूदा समय में गांधी विचार की प्रासंगिकता' विषय पर आयोजित संगोष्ठी में विषय प्रवेश कराते हुए डॉ. किशोर ने कहा कि उदारीकरण तथा वैश्वीकरण के दौर में बढ़ती आर्थिक विषमता, बिगड़ते सामाजिक सद्भाव तथा हिंसा के वातावरण में बापू के विचार आज ज्यादा प्रासंगिक है। सत्य, अहिंसा, सादगी, अपरिग्रह, श्रम तथा नैतिकता को अपनाकर ही सह-अस्तित्व एवं समानता पर आधारित शोषण मुक्त समाज का निर्माण संभव है। आज गांधी मरकर भी दुनिया के अरबों लोगों के दिल में हैं और उनकी विश्वव्यापकता बढ़ती जाती है। मुख्य वक्ता प्रसिद्ध कथाकार राजेन्द्र सिन्हा ने कहा कि जब तक मानवता धरती पर है, गांधी प्रासंगिक हैं। बापू के चिंतन पर हमला अशिक्षा तथा मानसिक विकृति का परिणाम है। बारूद के ढेर पर बैठे विश्व को गांधी के चिंतन को अमल में लाने की जरूरत है। विमल कुमार परिमल ने कहा कि भारत को अगर दुनिया जानती है तो गांधी और बुद्ध की प्रासंगिकता युगों तक रहेगी। सर्वोदय मंडल के जिला मंत्री हरिनारायण सिंह, सत्यनारायण सिह, दिलीप कुमार शाही, ब्रजमोहन मंडल, दिनेशचन्द्र द्विवेदी , आफताब अंजुम, राम प्रमोद मिश्र, नन्दकिशोर मंडल, उपेन्द्र चौधरी, ताराकांत झा, रामतपन सिंह, विजय कुमार पाण्डेय, रामबलम राय, सुरेश प्रसाद, मनोज कुमार, चन्द्रजीत यादव, महेन्द्र ठाकुर, सुरेश वर्मा, त्रिपुरारी कुमार सुमन, मो शरफ्फुल हसन, सुरेश लाल कर्ण, मुरलीधर मधुकर, प्रो. अरुण पाठक, जयप्रकाश राय, उमाशंकर सिंह, मो. गयासुद्दीन, विनय कुमार चौधरी तथा जलंधर यदुबंशी और संजय कुमार सहित सभी वक्ताओं ने गांधी तथा शास्त्री जी की जीवनी पर चर्चा की व उनके विचारों पर चलने का संकल्प व्यक्त किया।

गांधी जयंती पर गोष्ठी

गांधी को बदनाम करने की साजिश देश में कई वर्षों से चल रही है। राष्ट्रपिता के देश में उनका अपमान करना और उसे सहन करना ठीक नहीं है। दुनिया हिंसा के कगार पर खड़ी है। गांधीजनों का दायित्व है कि वे देश के बड़े वर्ग से संपर्क करें, उनके बीच जायें और सही बात को समझायें। ग्लोबल वार्मिंग से पर्यावरण असंतुलित हो रहा है, आर्थिक असमानता बढ़ रही है। यह देश की ज्वलंत समस्या है। इस पर विचार कर उपाय ढूंढने होंगे। नये गांधी केन्द्रों की स्थापना कर लोगों को अधिकाधिक जोड़ना होगा। यह विचार सर्वोदय समाज के संयोजक शेख हुसैन ने जोधपुर में आयोजित गोष्ठी में व्यक्त किये।

इस अवसर पर शहर काजी मोहम्मद तैय्यब अंसारी ने कहा कि युवा पीढ़ी में गांधी के प्रति रुझान कम है, बच्चों में रचनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से जागृति लानी होगी। गांधी-150 कार्यक्रम के समन्वयक अविनाश काकड़े ने कहा कि सेवाग्राम में मार्च 1948 में विनोबा ने गांधीजनों की सभा में कहा था कि गीता मार्गदर्शक है। लोगों को दिग्भ्रमित होने की आवश्यकता नहीं है। गांधी ने कहा कि हम राष्ट्र में रहने वाले सभी धर्मों का आदर करेंगे और कमजोर व्यक्ति की सेवा करेंगे। मानवीय राष्ट्रवाद की कल्पना से ही बापू ने आजादी हासिल की। उन्होंने कहा कि देश के युवाओं को रोजगार देने, किसानों के पिछड़ेपन को दूर करने और समाज के पिछड़े वर्ग को समाज की मुख्य धारा में लाने की आवश्यकता है। गांधी के विचारों पर विश्वास है तो आप लोग नये लोगों को अभियान में जोड़ने की जिम्मेदारी लें। डॉ. ओ. पी. टाक ने कहा कि शिक्षण संस्थाओं में 'गांधी-150' फिल्म का प्रदर्शन करें एवं गांधी के बारे में फैली भ्रांतियां दूर करें, जिससे गांधी की असली तस्वीर लोगों तक पहुंच सके। अध्यक्षीय उद्बोधन में आशा बोथरा ने कहा कि विदेशों में लोग गांधी को अधिक पढ़ते हैं। पीड़ा सृजन को जन्म देती है अतः हम सोचें और काम करें क्योंकि विचारधारा को ग्रहण करने के लिए अध्ययन की आवश्यकता है, प्रशिक्षण की आवश्यकता है। प्रारंभ में सचिव डॉ. भावेन्द्र शरद जैन ने गांधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र द्वारा संचालित गतिविधियों की विस्तृत जानकारी दी और कहा कि 'मेरा जीवन ही मेरा संदेश है' इसे आचरण में लेकर कार्यक्रमों को मूर्तरूप प्रदान करें। इस अवसर पर रामचंद्र पुरोहित, शशि त्यागी, डॉ. संध्या शुक्ल, गौतम के. गट्स, रामकिशोर जाखड़, धर्मेश रूटिया, बीजाराम तथा डॉ. किरण शर्मा सहित अनेक वक्ताओं ने अपने विचार प्रकट किये।

–डॉ. भावेन्द्र शरद जैन

सर्व सेवा संघ प्रकाशन में गांधी जयंती

गांधी किसी व्यक्ति का नही, बल्कि एक विचारधारा का नाम है। आज देश में जो परिस्थितियां हैं, उनमें हत्या के सत्तर साल बाद भी आजतक गांधी को खत्म करने की कोशिशें चल रही हैं। लेकिन विचार नष्ट नहीं होते, इसलिए गांधी का विचार, गांधी का नाम अक्षुण्ण हैं। आज गांधी को सभी विषयों के विद्यार्थी अपने पाठ्यक्रमों में पढ़ते हैं। गांधी जी अपने जीवन मे जिन मूल्यों की बात करते थे, उनका अपने जीवन में प्रयोग करते थे, उन्हें शिद्दत से जीते भी थे। आज उन्हें याद करने का दिन है, उनके मूल्यों को जीवन में उतारने का संकल्प लेने का दिन है। ये विचार राजघाट स्थित सर्व सेवा संघ प्रकाशन के सभागार में महात्मा गांधी की 150 वीं जयंती के अवसर पर 2 अक्टूबर को सर्व सेवा संघ द्वारा आयोजित 'गांधी की प्रासंगिकता' विषयक संगोष्ठी में बोलते हुए वाराणसी के अपर नगर मजिस्ट्रेट एम एम वर्मा ने व्यक्त किये। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए गांधी विचारक, चिंतक और वक्ता शक्ति कुमार ने कहा कि गांधी के लिए सत्य की महत्ता ईश्वरीय तत्व के बराबर थी। उनका स्पष्ट मानना था कि सत्य की साधना में किसी मिलावट की कोई गुंजाइश नहीं होती। अगर आप अपने तपःपूर्ण जीवन में दूसरों से बहुत आगे हैं और यहां तक कि अकेले भी हैं, तब भी आपको इसका खेद नही होना चाहिए। सुरेश कुमार अकेला ने कहा कि इस बात को गम्भीरता से समझ लेना चाहिए कि गांधी और डॉ अम्बेडकर के बीच कुछ बिन्दुओं पर मतभेद अवश्य थे, लेकिन उनके बीच मनभेद नही था। हमें महापुरुषों के बीच विचार संघर्ष के बीज बोने से बचना चाहिए, जिससे राष्ट्रीय एकता का निर्माण हो। आज समय की यही मांग है।

कार्यक्रम में अपने विचार रखते हुए आत्मप्रकाश जी ने कहा कि बापू के विचारों को बच्चों के बीच प्रमुखता से रखने की आवश्यकता है, तभी हम बापू के सपनों का भारत बना सकते हैं। संगोष्ठी में डॉ. रियाज़ अहमद, सुधीर जायसवाल, खुर्शीद आलम, बेलाल अहमद, जफर बनारसी, साहिल अहमद आदि ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संचालन डॉ मोहम्मद आरिफ ने तथा धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम संयोजिका शीलम झा ने किया।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से शाहीन अंसारी, सुधीर जायसवाल, तारकेश्वर, नंदकिशोर, नीलाभ लोचन, महेंद्र भाई, अनूप कुमार, सुशील कुमार, सविता, विमला आदि लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत मे सर्व सेवा संघ राजघाट से टाउनहाल गांधी प्रतिमा तक पदमार्च निकाला गया और वहां गांधी प्रतिमा पर सर्वधर्म प्रार्थना का आयोजन किया गया।

–मो. आरिफ

भगत सिंह की विचार धारा पर शोध कार्य की आवश्यकता

भगत सिंह की 112वीं जयंती के अवसर पर 28 सितंबर को गांधी स्मारक भवन, चंडीगढ़ के सभागार में विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि पंजाब विधान सभा के स्पीकर राणा के. पी. सिंह तथा विशिष्ट अतिथि भगत सिंह के भतीजे किरण जीत सिंह ने कार्यक्रम में शिरकत की। अध्यक्षता गांधी स्मारक निधि के अध्यक्ष के.के. शारदा ने की। मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए प्रसिद्ध इतिहासकार एम. एम. जुनेजा ने कहा कि भगत सिंह को जब फांसी देने के लिए ले जाया जा रहा था तो भगत सिंह के चेहरे पर हंसी थी और ले जाने वाले लोग रो रहे थे।

राणा के. पी. सिंह ने कहा कि भगत सिंह कोई साधारण क्रांतिकारी नहीं थे। वे एक सुपर क्रांतिकारी थे। भगत सिंह ने भारतीय संस्कृति को सही मायनों में समझा है। उन्होंने कहा कि भगत सिंह की राजनीतिक सोच पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है। इसके लिए भगत सिंह पर चेयर स्थापित की जाने की जरूरत है। के.के. शारदा ने कहा कि भगत सिंह की लोकप्रियता इतनी थी कि जब उनकी अस्थियों को लाहौर से लाया गया तो करीब एक लाख लोग वहाँ मौजूद थे। डॉ. देवराज त्यागी ने कार्यक्रम के आरम्भ में आतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन दीपक चनारथल ने किया। इस अवसर पर प्रसिद्ध गायकों द्वारा देश भक्ति के गीत प्रस्तुत किए गए। ❑

'Sarvodaya Jagat' Hindi Fortnightly
Registered under RNI No. 35495/78, Postal Registration No. VSI-(E) 04, Valid upto 31 December 2020
Issued by S.S.P.O. Varanasi (East Division)

कविताएं

युगावतार गांधी

❑ सोहनलाल द्विवेदी

चल पड़े जिधर दो डग मग में
चल पड़े कोटि पग उसी ओर,
पड़ गई जिधर भी एक दृष्टि
गड़ गये कोटि दृग उसी ओर,
जिसके सिर पर निज धरा हाथ
उसके सिर-रक्षक कोटि हाथ,
जिस पर निज मस्तक झुका दिया
झुक गये उसी पर कोटि माथ;
हे कोटिचरण, हे कोटिबाहु!
हे कोटिरूप, हे कोटिनाम!
तुम एकमूर्ति, प्रतिमूर्ति कोटि
हे कोटिमूर्ति, तुमको प्रणाम!
युग बढ़ा तुम्हारी हँसी देख
युग हटा तुम्हारी भृकुटि देख,
तुम अचल मेखला बन भू की
खींचते काल पर अमिट रेख;
तुम बोल उठे, युग बोल उठा,
तुम मौन बने, युग मौन बना,
कुछ कर्म तुम्हारे संचित कर
युगकर्म जगा, युगधर्म तना;

युग-परिवर्तक, युग-संस्थापक,
युग-संचालक, हे युगाधार!
युग-निर्माता, युग-मूर्ति! तुम्हें
युग-युग तक युग का नमस्कार!
तुम युग-युग की रूढ़ियाँ तोड़
रचते रहते नित नई सृष्टि,
उठती नवजीवन की नींवें
ले नवचेतन की दिव्य-दृष्टि;
धर्माडंबर के खँडहर पर
कर पद-प्रहार, कर धराध्वस्त
मानवता का पावन मंदिर
निर्माण कर रहे सृजनव्यस्त!
बढ़ते ही जाते दिग्विजयी!
गढ़ते तुम अपना रामराज,
आत्माहुति के मणिमाणिक से
मढ़ते जननी का स्वर्णताज!
तुम कालचक्र के रक्त सने
दशनों को कर से पकड़ सुदृढ़,
मानव को दानव के मुँह से
ला रहे खींच बाहर बढ़ बढ़;

पिसती कराहती जगती के
प्राणों में भरते अभय दान,
अधमरे देखते हैं तुमको,
किसने आकर यह किया त्राण?
दृढ़ चरण, सुदृढ़ करसंपुट से
तुम कालचक्र की चाल रोक,
नित महाकाल की छाती पर
लिखते करुणा के पुण्य श्लोक!
कँपता असत्य, कँपती मिथ्या,
बर्बरता कँपती है थरथर!
कँपते सिंहासन, राजमुकुट
कँपते, खिसके आते भू पर,
हैं अस्त्र-शस्त्र कुंठित लुंठित,
सेनाएं करती गृह-प्रयाण!
रणभेरी तेरी बजती है,
उड़ता है तेरा ध्वज निशान!
हे युग-दृष्टा, हे युग-स्रष्टा,
पढ़ते कैसा यह मोक्ष-मंत्र?
इस राजतंत्र के खँडहर में
उगता अभिनव भारत स्वतंत्र! ❑

बापू महान!

❑ नागार्जुन

बापू महान, बापू महान!
ओ परम तपस्वी! परम वीर!
ओ सुकृति शिरोमणि! ओ सुधीर!
तुम ग्राम-हृदय, तुम ग्राम-दृष्टि
तुम कठिन साधना के प्रतीक
तुमसे दीपित है सकल सृष्टि।
कुर्बान हुए तुम, सुलभ हुआ

सारी दुनिया को ज्ञान-दान
बापू महान, बापू महान!!
हे सत्य-अहिंसा के प्रतीक!
हे प्रश्नों के उत्तर सटीक!
हे युगनिर्माता, युगाधार!
आतंकित तुमसे पाप-पुंज
आलोकित तुमसे जग जहान!

बापू महान, बापू महान!!
दो चरणों वाले कोटि चरण!
दो हाथों वाले कोटि हाथ!
तुम युग-निर्माता, युगाधार!
रच गये कई युग एक साथ,
तुम ग्रामात्मा, तुम ग्राम-प्राण!
बापू महान, बापू महान!! ❑

सर्व सेवा संघ (स्वत्वाधिकारी) के लिए महामंत्री, शेख हुसैन द्वारा सर्व सेवा संघ परिसर, राजघाट, वाराणसी (उ.प्र.) 221001 से प्रकाशित तथा महावीर प्रेस, भेलूपुर, वाराणसी से मुद्रित। संपादक : बिमल कुमार।